

बुलेटिन

सहकारी तथा गरिबी निवारण त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष १ Year 1

अंक १ Vol. 1

२०६९ कार्तिक/Oct.-Nov. 2012



नेपाल सरकार

Government of Nepal

सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालय

Ministry of Co-Operatives and Poverty Alleviation

फोन नं. ०१-४२११८६०, ०१-४२०००५५, फ्याक्स नं. ०१-४२११७५४, वेब : www.mocpa.gov.np

सल्लाहकार

सचिव श्री रणबहादुर श्रेष्ठ

संयोजक

सह-सचिव श्री सुदर्शन प्रसाद ढकाल

सदस्यहरू

उप-सचिव श्री सानुकाजी देसाय

उप-सचिव श्री चन्द्रबहादुर ठकुरी

लेखा अधिकृत श्री जगन्नाथ शर्मा पौडेल

सम्पादक

शाखा अधिकृत श्री रुक्मागत अर्याल

सम्पादन सहयोगी

शाखा अधिकृत श्री लक्ष्मी नारायण वैद्य

कम्प्युटर अपरेटर श्री समीक्षा मिश्र

कम्प्युटर लै-आउट

आनन्द पौडेल

९७५१००६२०१

मुद्रण

नेशनल मानसरोवर प्रिन्टिङ्ग प्रेस प्रा.लि.

चादनीनगर, नयाबानेश्वर, काठमाडौं

फोन: ०१-४४६०४७७

ई-मेल: nmsprintingpress@gmail.com

Cover Photo

Hon' Minister Ek Nath Dhakal with High Level Pannelist of Round Table Conference in International Summit of Co-operatives on Oct. 8-11, 2012 in Quebec city of Canada

सम्पादकीय.....



२०६९ साल जेष्ठ ५ गते (मै १८, २०१२) गठन भएको सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालयले पहिलो पटक यो त्रैमासिक बुलेटिन प्रकाशनमा ल्याएको छ । यस प्रकाशनबाट सूचनाको हक सम्बन्धी कानूनी व्यवस्थाको प्राबधानहरूलाई समेत मध्येनजर गर्दै मन्त्रालयका महत्वपूर्ण गतिविधिहरूका साथमा सहकारी तथा गरिवी निवारण सम्बन्धी लेख रचनाहरू प्रकाशन गरी यस क्षेत्रको विकास, विस्तार र प्रबर्द्धनमा योगदान पुग्ने अपेक्षा गरिएको छ । नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ ले सहकारी क्षेत्रलाई आर्थिक विकासको एक महत्वपूर्ण पक्षको रूपमा स्वीकार गरेको छ । देशमा अहिले करिब २७ हजार सहकारी संस्थाहरू क्रियाशिल रहेका र यसमा ३७ लाख सदस्यहरूको आवद्धता रहेको छ । सहकारी क्षेत्रमा कूल वित्तीय कारोवारको १५ प्रतिशत भन्दा बढी (रु. २ खर्ब) पंजी र बचत निक्षेप परिचालन भएको देखिएको छ । नेपालको सबै जिल्लाहरूमा सहकारी संस्थाहरूको पहुँच पुगेको छ । सहकारी क्षेत्रलाई व्यवस्थित र बहुआयामिक बनाउन धेरै प्रयासहरूको आवश्यकता देखिएको छ ।

यसैगरी गरिवी निवारणको क्षेत्रमा विषयगत निकायको रूपमा मन्त्रालयले पाएको जिम्मेवारी निर्वाह गर्नु पर्ने दायित्व मन्त्रालयको रहेको छ । छरिपर रहेका गरिवी निवारणसाग सम्बन्धित कार्यक्रमहरू बीच समन्वय, अनुगमन र प्रभावकारिताका लागि मन्त्रालयको भूमिकालाई प्रभावकारी बनाउदै लैजानु पर्ने चुनौति रहेको छ ।

बुलेटिनमा उल्लिखित सहकारी तथा गरिवी निवारण सम्बन्धी जानकारी मूलक लेख, रचना र विवरणहरूले यस क्षेत्रमा सम्बद्ध सरकारी एवं गैरसरकारी संघ संस्था तथा निकायहरूलाई सहयोगी हुने अपेक्षा गरिएको छ । बुलेटिनलाई अझ सन्देशमूलक र उपयोगी बनाउनका लागि थप सूचना, जानकारी एवं सुझावहरू मण्डला मन्त्रालयलाई उपलब्ध गराई सहयोग गरिदिनु हुन सबैमा अनुरोध छ ।

यस अंकमा समाविष्ट गरिएका विषयहरू

- ✓ सम्पादकीय लेख
- ✓ सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालयको गतिविधि
- ✓ राष्ट्रिय एवं अन्तर्राष्ट्रिय सभा/सम्मेलन/गोष्ठी/तालिम/सेमिनार
- ✓ मन्त्रालयको रणनीतिक पत्र २०६९
- ✓ मन्त्रालयका सूचना तथा विज्ञापित
- ✓ सहकारी व्यवस्थापनको आधारभूत पक्षहरू - सह-सचिव श्री सुदर्शन प्रसाद ढकाल

2012

International
Year of

Cooperatives



COOPERATIVE ENTERPRISES BUILD A BETTER WORLD

Activities of International Year of Cooperatives:

- **Increase awareness:** increase public awareness about cooperatives and their contributions to socio-economic development and the achievement of the Millennium Development Goals.
- **Promote growth:** Promote the formation and growth of co-operatives among individuals and institutions to address common economic needs and for socio-economic empowerment.
- **Establish appropriate policies:** Encourage Governments and regulatory bodies to establish policies, laws and regulation conducive to co-operative formation and growth.



मन्त्रालयका हाल कार्यरत पदाधिकारीको मागवली

| सि.न. | पद | नाम, बर | कामकाज गर्ने शाखा | कार्यालय | मोबाईल |
|-------|------------------|-----------------------------|--|----------|------------|
| | | | | टेलिफोन | |
| १. | माननीय मन्त्री | श्री एकनाथ ढकाल | | ४२०००५५ | ९८५१०३०२४८ |
| २. | सचिव | श्री रणवहादुर श्रेष्ठ | | ४२११८९० | ९८५१०२६४९२ |
| ३. | सह-सचिव | श्री कृष्ण प्रसाद लम्साल | योजना तथा गरिबी निवारण महाशाखा | ४२११७८१ | ९८४९५५९८१३ |
| ४. | सह-सचिव | श्री सुदर्शन प्रसाद ढकाल | सहकारी तथा व्यवस्थापन महाशाखा | ४२०००५८ | ९८५११४१०५९ |
| ५. | उप-सचिव | श्री सानुकाजी देशर | प्रशासन तथा जनशक्ति विकास शाखा | ४२११६५७ | ९८४१४५८६०३ |
| ६. | उप-सचिव (कानून) | श्री केशवप्रसाद अधिकारी | कानून शाखा | ४२११९०६ | ९८४१३६४२१७ |
| ७. | उप-सचिव | श्री रमेश प्रसाद पुडासैनी | मन्त्रीज्यू निजी सचिवालय | ४२११९७६ | ९८४१२५४०१० |
| ८. | उप-सचिव | श्री बिजु कुमार श्रेष्ठ | गरिबी निवारण शाखा | ४२११७८१ | ९८४१२२३१६६ |
| ९. | उप-सचिव | श्री बाबुराम मुशास | सहकारी प्रवर्द्धन शाखा | ४२११७८१ | ९८४१३५३६८३ |
| १०. | उप-सचिव | श्री महेश पराजुली | योजना तथा नीति तर्जुमा शाखा | ४२११७८१ | ९८४१७७३९८३ |
| ११. | उप-सचिव | श्री चन्द्र वहादुर ठकुरी | अनुगमन, मूल्यांकन तथा अनुसन्धान शाखा | ४२११९७६ | ९८४१९१३११५ |
| १२. | शाखा अधिकृत | श्री नारायण प्रसाद रेग्मी | सचिवज्यूको निजी सचिवालय/गरिबी निवारण शा. | ४२११८६० | ९८५१११९९६६ |
| १३. | शाखा अधिकृत | श्री अनुज भण्डारी | प्रशासन तथा जनशक्ति विकास शाखा | ४२११९१० | ९८५११०६२३६ |
| १४. | शाखा अधिकृत | श्री ज्योत्सना भट्ट | सहकारी प्रवर्द्धन शाखा | ४२११७५५ | ९८४१५६४८९३ |
| १५. | लेखा अधिकृत | श्री जगन्नाथ शर्मा | आर्थिक प्रशासन शाखा | ४२११५७६ | ९८४१५२६२१६ |
| १६. | शाखा अधिकृत | श्री धर्मराज रोकया | सहकारी प्रवर्द्धन शाखा | | ९८४९९४३१५२ |
| १७. | शाखा अधिकृत | श्री लक्ष्मीनारायण वैद्य | प्रशासन तथा जनशक्ति विकास शाखा | ४२११६९० | ९८४१३९५१३३ |
| १८. | शाखा अधिकृत | श्री सावित्री खड्का | योजना तथा गरिबी निवारण महाशाखा | | |
| १९. | शाखा अधिकृत | श्री रुक्मागत अर्याल | योजना तथा नीति तर्जुमा शाखा | | ९८४१८३११८८ |
| २०. | शाखा अधिकृत | श्री धृताकुमारी खत्री | अनुगमन, मूल्यांकन तथा अनुसन्धान शाखा | | ९८४८१७४४५९ |
| २१. | तथ्यांक शास्त्री | श्री आनन्दराज अर्याल | अनुगमन, मूल्यांकन तथा अनुसन्धान शाखा | | ९८५११३७३१४ |
| २२. | शाखा अधिकृत | श्री रोशनी श्रेष्ठ | गरिबी निवारण शाखा | | ९८४१२८२६८० |
| २३. | शाखा अधिकृत | श्री भरत प्रसाद ढकाल | गरिबी निवारण शाखा | | ९८४१६५८४८४ |
| २४. | कम्प्युटर अधिकृत | श्री अनिल श्रेष्ठ | योजना अनुगमन तथा नीति निर्माण शाखा | ४२११६३७ | ९८४९३३३९६१ |
| २५. | लेखा अधिकृत | श्री जयराज अवस्थी | आर्थिक प्रशासन शाखा | | |
| २६. | नायब सुब्बा | श्री रामवहादुर बस्नेत | सचिवज्यूको सचिवालय | ४२११८९० | ९८४१३४२५४३ |
| २७. | नायब सुब्बा | श्री अनुपमान उवास | योजना तथा नीति तर्जुमा शाखा | ४२११५७६ | ९८०८००६६८७ |
| २८. | नायब सुब्बा | श्री गोविन्दप्रसाद लामिछाने | जिन्दी | ४२११६३७ | ९८४१३६२८६३ |
| २९. | खरिदार | श्री शंकरबाबु आचार्य | सहकारी तथा व्यवस्थापन महाशाखा | ४२०००५८ | ९८४१४८७९८७ |
| ३०. | खरिदार | श्री बाबुराम पौडेल | दर्ता चलानी | | ९८४१७७३५८० |
| ३१. | का.स. | श्री होमबहादुर बस्नेत | सहकारी तथा व्यवस्थापन महाशाखा | | ९८४१७८१७१४ |
| ३२. | का.स. | श्रीमती सविना डगोल | दर्ता चलानी | | ९८४१८०७६४० |
| ३३. | सह-लेखापाल | श्री रविन्द्र कोइराला | आर्थिक प्रशासन शाखा | | ९८४९५१८७०० |
| ३४. | क. अपरेटर | श्री समिन्ना मिश्र | प्रशासन तथा जनशक्ति विकास शाखा | | ९८४१७१३३८८ |
| ३५. | क. अपरेटर | श्री दामुका पौडेल | योजना तथा नीति तर्जुमा शाखा | | |
| ३६. | क. अपरेटर | श्री राज कुमार तामाङ | मन्त्रीज्यू निजी सचिवालय | | |
| ३७. | ह.स.चा. | श्री चित्र वहादुर कार्की | पुल बा १ भ ६९१७ | | |
| ३८. | ह.स.चा. | श्री राजेश बर्पेलिया | सहकारी (बा १ भ ८७४७) | | |
| ३९. | ह.स.चा. | श्री लीकेश ढकाल | गरिबी (बा १ भ ५९६३) | | |
| ४०. | ह.स.चा. | श्री रामकृष्ण मानन्धर | | | |
| ४१. | ह.स.चा. | श्री मिनु गौले | | | |
| ४२. | का.स. | श्री विमला तुलाल | | | |
| ४३. | का.स. | श्री अनुसुया पौडेल | | | |
| ४४. | का.स. | श्री दिपा कार्की | | | |
| ४५. | का.स. | श्री कृष्ण वहादुर खत्री | | | |
| ४६. | का.स. | श्री अनु तामाङ | | | |
| ४७. | का.स. | श्री किशोर मुजेल | | | |

सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालयको गठन :

नेपाल सरकारको निर्णयानुसार मिति २०६९।२।५ मा सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालयको स्थापना भएको हो । नेपाल सरकार (कार्यविभाजन)नियमावली, २०६९ अनुसार मन्त्रालयको कार्यक्षेत्र देहाय बमोजिम रहेको छ :

१. सरकारी गरिबी निवारण सम्बन्धी नीति, योजना तथा कार्यक्रमको तर्जुमा, कार्यान्वयन, अनुगमन, मूल्यांकन,
२. सहकारी संघ/संस्थाको विकास, सुदृढीकरण र नियमन,
३. सहकारी र आर्थिक विकास,
४. सहकारीको प्रवर्द्धन र संरक्षण,
५. अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी संगठनसम्बन्धी विषय,
६. अन्तर्राष्ट्रियस्तरमा सहकारी संस्थाको प्रवर्द्धन र विकास,
७. सहकारी वचत तथा ऋण लगानी सम्बन्धी विषय,
८. सहकारी र गरिबी निवारणसँग आवद्ध संघ/संस्थाको अनुगमन, रेखदेख र नियमन,
९. सहकारी रकमको लगानी,
१०. सहकारी र गरिबी निवारणसम्बन्धी विभिन्न निकायबाट सञ्चालित कार्यक्रमको समन्वय, अनुगमन र मूल्यांकन,

११. सहकारी र गरिबी निवारणसँग सम्बन्धी अन्तर मन्त्रालयगत कार्यको समन्वय
१२. सीमान्तकृत, विभिन्न वर्ग र समुदायमा रहेका गरिबको पहिचान,
१३. सहकारी र गरिबी निवारणका क्षेत्रमा कार्यरत राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थाको प्रवर्द्धन, कामको समन्वय अनुगमन र मूल्यांकन,
१४. सहकारी र गरिबी निवारण सम्बन्धी अध्ययन, अनुसन्धान, सर्वेक्षण,
१५. सहकारीसम्बन्धी क्षमता अभिवृद्धि,
१६. सहकारी र गरिबी निवारण सम्बन्धी आयोजनाको संभाव्यता अध्ययन, कार्यान्वयन, अनुगमन र मूल्यांकन,
१७. सहस्राब्दी विकास लक्ष्य गरिबी निवारण सम्बन्धी,
१८. राष्ट्रिय सहकारी विकास बोर्ड,
१९. सहकारी संघ सस्था ।

मन्त्रालयको संक्षिप्त संगठन तथा व्यवस्थापन प्रतिवेदन :

नेपाल सरकार मन्त्रपरिषद्को मिति २०६९।३।१५ को निर्णयानुसार नव गठित सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालयको संक्षिप्त संगठन तथा व्यवस्थापन (O&M) प्रतिवेदन स्वीकृत भएको छ । मन्त्रालयको स्वीकृत संगठन र जनशक्ति देहाय बमोजिम रहेको :

मन्त्रालय अन्तर्गतका महाशाखाहरू :

(१) योजना तथा गरिबी निवारण महाशाखाको कार्य विवरण तथा शाखाहरू :

कार्य विवरण :

- ❖ सम्बन्धित योजना तथा कार्यक्रम तर्जुमा सम्बन्धी कार्यहरू गर्ने र स्वीकृत कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्ने गराउने,
- ❖ कार्यान्वयन भैरहेको योजना तथा कार्यक्रमहरूको अनुगमन समिक्षा तथा मूल्यांकन गर्ने,
- ❖ गरिबी निवारण सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय संस्थाहरूसँग सम्बन्धित महासन्धीहरूको कार्यान्वयनको जानकारी तथाक संकलन र सूचना आधावधिक राख्ने,
- ❖ गरिबी क्षेत्रको पहिचान तथा अभिलेखन कार्य गर्ने,

- ❖ गरिबी निवारणको कार्यक्रमको विस्तार, परिमार्जन र उपयोगको लागि निजी क्षेत्रसँग समन्वयात्मक कार्य गर्ने,
- ❖ विभिन्न शैक्षिक संस्था, विश्वविद्यालय तथा वैज्ञानिक व्यक्तित्व संग छलफल र सहकार्यको वातावरण तयार गरि गरिबी निवारणको क्षेत्रको विकास तथा प्रवर्द्धन गर्ने,
- ❖ विद्वत सोधवृत्ति, वैज्ञानिक चिन्तनमञ्च, तथा सहकारी तथा गरिबी निवारण क्षेत्रमा कार्यरत प्रतिभालाई पलायनबाट रोक्न आवश्यक कार्यक्रम तर्जुमा गरि स्वीकृत भए पछि कार्यान्वयन गर्ने,
- ❖ सहकारी तथा गरिबी निवारणका कार्यलाई प्रवर्द्धन गर्न आवश्यक सूचना संकलन तथा अनुगमन गर्ने,
- ❖ सहकारी तथा गरिबी निवारणको क्षेत्रमा अन्तर्राष्ट्रिय संजाल विस्तार गरी राष्ट्रहितमा उपयोग गर्ने रणनीति तर्जुमा र कार्यान्वयन गर्ने,
- ❖ स्थानरूप सूचना केन्द्र सम्बन्धी कार्य गर्ने ।

शाखाहरू :

- ❖ योजना तथा नीति तर्जुमा शाखा

गरिबी निवारण शाखा

अनुगमन,मूल्याङ्कन तथा अनुसन्धान शाखा

(२) सहकारी तथा व्यवस्थापन महाशाखाको कार्य विवरण तथा शाखाहरु :

कार्य विवरण :

- ❖ कर्मचारी दरवन्दी सृजना तथा पदपूर्ति सम्बन्धी आवश्यक कार्य गर्ने,
- ❖ निजामती सेवा, ऐन तथा नियमावली बमोजिम मन्त्रालयका कर्मचारीहरुलाई दिइने सुविधा, पुरस्कार तथा दण्ड सजाय सम्बन्धी आवश्यक कार्य गर्ने,
- ❖ आन्तरिक प्रशासन र कर्मचारी प्रशासन सम्बन्धी कार्य गर्ने,
- ❖ कर्मचारीको लागि स्वदेशी तथा वैदेशिक तालिम तथा छात्रवृत्तिको आवश्यकता पहिचान गरी तत्सम्बन्धी संस्थाहरुसंग समन्वय गरी उपयुक्त कर्मचारीहरुको मनो नयन सम्बन्धी कार्य गर्ने,
- ❖ वार्षिक कार्यक्रम अनुसार बजेट तर्जुमा गर्ने
- ❖ मन्त्रालयको केन्द्रीय लेखा संचालन गर्ने,
- ❖ पुस्तकालयको व्यवस्थापन गरी सूचना केन्द्रको रुपमा विकास गर्ने
- ❖ मातहतका कर्मचारीहरुको कामको सुपरिवेक्षण गर्ने र आवश्यक निर्देशन दिने,

- ❖ मातहतका कर्मचारीहरुको कार्य सम्पादन मूल्यांकन गर्ने
- ❖ प्रत्यायोजित अधिकार बमोजिम कर्मचारीको काज तथा विदा स्विकृत गर्ने,
- ❖ प्रत्यायोजित अधिकार बमोजिम आर्थिक प्रशासन सम्बन्धी कार्य गर्ने गराउने
- ❖ मन्त्रपरिषदमा पेश गर्ने प्रस्ताव तयार गर्ने
- ❖ तोकिए बमोजिम योजना तथा कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्ने र समिक्षा गर्ने,
- ❖ यस महाशाखालाई निर्दिष्ट गरिएका अन्य कार्यहरु गर्ने
- ❖ सहकारी तथा गरिबी निवारणको व्यापककरणको आवश्यक रणनीति योजना कार्यक्रम तयार गरी स्वीकृत भए पछि कार्यान्वयन गर्ने
- ❖ सहकारी संघसंस्थाहरुको विकास तथा प्रवर्द्धन कार्यहरु सुचारु गराउने
- ❖ अन्तर्राष्ट्रिय संघसंस्थाहरुसंग समन्वय कायम गर्ने
- ❖ सहकारी संघसंस्थाको अनुगमन नियमन तथा अनुसन्धान गर्ने ।

शाखाहरु :

- ❖ प्रशासन तथा जनशक्ति विकास शाखा
- ❖ सहकारी प्रवर्द्धन शाखा
- ❖ ऐन,नियम परामर्श शाखा
- ❖ आर्थिक प्रशासन शाखा

मन्त्रालयको जनशक्ति विवरण :

| क्र.सं. | पद | श्रेणी/तह | सेवा/समूह/उपसमूह | कूल दरवन्दी |
|---------|------------------|----------------|--------------------------|-------------|
| १ | सचिव | विशिष्ट | | १ |
| २ | सह-सचिव | रा.प.प्र. | प्रशासन | २ |
| ३ | उप-सचिव | रा.प.द्वि. | प्रशासन | ६ |
| ४ | उप-सचिव (कानून) | रा.प.द्वि. | न्याय, कानून समूह | १ |
| ५ | शाखा अधिकृत | रा.प.तृ. | प्रशासन | ८ |
| ६ | तथ्याङ्क अधिकृत | रा.प.तृ. | जनरल स्टा. | १ |
| ७ | अर्थ विज्ञ | रा.प.तृ. | ए.इ.मा. तथा स्टा. | १ |
| ८ | लेखा अधिकृत | रा.प.तृ. | प्रशासन सेवा , लेखा समूह | १ |
| ९ | ना.सु. | रा.प.अनं. प्र. | प्रशासन | ११ |
| १० | लेखापाल | रा.प.अनं. प्र. | प्रशासन सेवा, लेखा समूह | १ |
| ११ | खरिदार | रा.प.अनं.द्वि. | प्रशासन | ४ |
| १२ | सह-लेखापाल | रा.प.अनं.द्वि. | लेखा | १ |
| १३ | कम्प्युटर अपरेटर | रा.प.अनं. प्र. | विविध सेवा | ५ |
| १४ | टाईपिष्ट | वेगअनुसार | प्रशासन | १ |
| १५ | ह.स.चा. | श्रेणी विहिन | प्रशासन | ६ |
| १६ | का.स. | श्रेणी विहिन | प्रशासन | ९ |
| | | | जम्मा | ५९ |

अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी वर्ष २०१२ राष्ट्रिय समिति पुनर्गठन तथा सम्पादित क्रियाकलापहरु :

Co-operative Enterprises Build a Better world भन्ने नाराका साथ संयुक्त राष्ट्र संघको साधारण सभाले सन् २०१२ लाई अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी वर्ष घोषणा गरेको छ । नेपालमा पनि सो कार्यक्रम मनाउनका लागि यस अघि गठित राष्ट्रिय समितिलाई नेपाल सरकार मन्त्रपरिषद्को मिति २०६८।६।२३ को निर्णयानुसार माननीय सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्री एकनाथ ढकालज्यूको अध्यक्षतामा पुनर्गठन गरी उक्त राष्ट्रिय समितिमा सहकारी क्षेत्रका ७ जना सदस्य थप गरी ५८ सदस्यीय राष्ट्रिय समिति गठन गरीयो । सो समितिले पारित गरेका केही प्रमुख कार्यक्रमहरु तल उल्लेख गरिएको छ :

- ❖ राष्ट्रियस्तरका संरचना माध्यम (रेडियो, टि.भी.) मार्फत शिक्षा, सूचना र सचेतनाका कार्यक्रम प्रसारण गर्ने,
- ❖ ५ वटै विकासक्षेत्रमा गोष्ठी गर्ने,
- ❖ website निर्माण गरी सूचनाहरु समावेश गर्ने,

- ❖ राष्ट्रिय सहकारी नीति पारित गर्ने,
- ❖ सहकारी ऐनमा परिमार्जन गर्ने,
- ❖ वचत तथा ऋण ऐन एवं सहकारी बैंक ऐन तर्जुमा गर्ने,
- ❖ पुराना संघ/सस्थाहरुको सम्पती र दायित्वको वारेमा आवश्यक निर्णय लिन कार्यदल गठन गर्ने,
- ❖ सहकारीको विषयलाई सबै किसिमका प्रशिक्षण र लोकसेवा आयोगको पाठक्रममा समावेश गर्न पहल गर्ने,
- ❖ सहकारी सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय स्तरको गोष्ठी सम्मेलन गर्ने,
- ❖ सहकारी विभाग र सहकारी विकास बोर्डको O&M गर्ने,
- ❖ अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी वर्षको नारा र लोगो अंकित हुलाक टिकट प्रकाशन र सिक्का मुद्रण सम्बन्धी कार्य गर्ने,
- ❖ उत्कृष्ट १०० वटा सहकारी संघसस्थाको प्रोफाइल तयारी गर्ने ।

मन्त्रालयको रणनीतिक पत्र (Strategic paper). २०६८

मन्त्रालयका सह सचिव श्री सुर्दशन प्रसाद ढकाल ज्यूको संयोजकत्वमा योजना शाखाका शाखा प्रमुख उप सचिव श्री महेश पराजुली सदस्य सचिव रहेको कार्यदलले मस्यौदा गरेको सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालयको रणनीतिक पत्र मिति २०६९।७।३ (मन्त्रीस्तरीय) निर्णय भई पारित भएको छ । उक्त रणनीतिक पत्रको पूर्ण अंश देहाय बमोजिम रहेको ।

१. पृष्ठभूमि (Background)

जनताको आर्थिक तथा सामाजिक जीवनस्तर उठाई सम्मानपूर्ण जीवनयापन गर्न पाउने अवसरको प्रत्याभूति गर्नु लोककल्याणकारी राज्यको प्रमुख ध्येय हो । सहकारी प्रणालीको अन्तरनिहित व्यापकता र हाम्रो जस्तो विकासशील देशमा यसको प्रचुर सम्भावनालाई विचार गर्दा सहकारी पद्धति मार्फत गरिवी न्यूनीकरण गर्न प्रशस्त योगदान पुग्न सक्ने देखिन्छ । यसै परिप्रक्ष्यमा संयुक्त राष्ट्र संघले समेत सहकारी व्यवसायको प्रवर्द्धन गरी देशको गरिवी न्यूनीकरण, उत्पादक पूर्ण रोजगारीको सिर्जना, तथा सामाजिक एकीकरणमा योगदान पुऱ्याउन सदस्य राष्ट्रहरुलाई आह्वान गरेको छ ।

नेपालमा गरिवी निवारण राष्ट्रिय चुनौतीको विषय रहिआएको छ । विगतमा अवलम्बन गरिएका नीति र कार्यक्रमहरुको फलस्वरूप गरिवीको रेखामुनि रहेको जनसंख्याको अनुपात घट्दो क्रममा छ । गएको पाँच वर्षमा धनी र गरिवीबीचको खाडल कम भएको पाइएको छ तर पनि महिला, दलित,

अल्पसंख्यक मधेसी, कर्णालीवासी, दुर्गम पहाडी क्षेत्रका बासिन्दा, शारीरिक रूपले अशक्त, शहरी क्षेत्रमा जोखिम क्षेत्रमा बसोबास गर्ने श्रमिकहरुमा अभै पनि गरिवीको गहनता विद्यमान छ । गरिवी न्यूनीकरण राष्ट्रिय मूल नीतिको रूपमा रहेको छ । तथापी यस सम्बन्धी कार्यक्रमहरुको कार्यान्वयन छरिएर (Fragmented) भएको देखिन्छ । गरिवी बहुआयामिक (Multi-dynamic) विषय भएकोले यसको सम्बोधन बहुकोणिक अवधारणा (Multi-pronged Approach) बाट मात्र गर्नसकिने हुदा सबै निकाय तथा क्षेत्रहरुको समन्वयात्मक प्रयाशको खाँचो पर्दछ । त्यसैगरी सहकारी र गरिवी निवारणका कार्यक्रमहरु एक अर्काका परिपूरकका रूपमा रहेका हुँदा गरिवी निवारण सम्बन्धी कार्यक्रमहरुको दिगोपनाको लागि पनि सहकारी उपागमको प्रयोग आवश्यक देखिएको छ ।

यिनै पृष्ठभूमिमा सहकारी तथा गरिवी निवारणसँग सन्बन्धित नीति तथा कार्यक्रमहरुलाई अभू बढी नतिजामूलक र प्रभावकारी बनाउन तथा गरिवी न्यूनीकरण गर्ने राष्ट्रिय लक्षलाई हासिल गर्न प्रभावकारी नेतृत्व र समन्वयको भूमिका निर्वाह गर्ने उद्देश्यले केन्द्रीय निकायको रूपमा यस मन्त्रालयको गठन भएको छ । नेपाल सरकार कार्य विभाजन नियमावली २०६९ अनुसार मुख्य रूपमा यस मन्त्रालयलाई सहकारी तथा गरिवी निवारणसँग सम्बन्धित नीति निर्माण, कार्यक्रमहरुको तर्जुमा, कार्यान्वयनको अनुगमन तथा मूल्यांकन

र समन्वयको जिम्मेवारी दिइएको छ। नेपाल सरकारबाट प्राप्त जिम्मेवारीलाई उच्च महत्व दिई सहकारी अर्थव्यवस्थाको गुणात्मक विकास एवं गरिवी न्यूनीकरणको राष्ट्रिय लक्ष्य प्राप्तमा सघाउ पुऱ्याउन मन्त्रालयले यो रणनीति पत्र प्रकाशमा ल्याएको छ।

२. वर्तमान अवस्था (Current Situation)

समुदायमा छरिएर रहेको श्रम, सीप, प्रविधि र पूँजीलाई एकत्रित गरी राष्ट्रिय अर्थतन्त्रमा योगदान पुऱ्याउन एवं सदस्यहरुको आर्थिक तथा सामाजिक रुपान्तरण गरी सम्बृद्ध समाजको निर्माण गर्न सहकारी संघ संस्थाहरु सशक्त माध्यम बन्न सक्दछन्। हाल देशका २५ हजार भन्दा बढी सहकारी संघ/संस्थाहरुमा करिव ३५ लाख नेपाली नागरिकहरु सदस्य बनिसकेका र तीनमा महिलाको सहभागिता ४२ प्रतिशत भन्दा बढी रहेको छ। कूल वित्तीय कारोवारमा सहकारी क्षेत्रको हिस्सा १५ प्रतिशत भन्दा बढी रहेको अनुमान छ भने सहकारी क्षेत्रले मुलुकको कूल गार्हस्थ उत्पादनमा ३ प्रतिशतले योगदान पुऱ्याएको अनुमान गरिएको छ। सहकारी क्षेत्रले हाल ७५ हजार भन्दा बढी नेपाली नागरिकलाई प्रत्यक्ष रोजगारी उपलब्ध गराई रहेको छ। सहकारी व्यवसायबाट लाखौंको संख्यामा मानिसहरु स्वरोजगार बन्न सकेका छन्। यति हुँदा हुँदै पनि विभिन्न नीतिगत तथा कानुनी अस्पष्टताका कारण सहकारी क्षेत्र बहुआयामिक र अपेक्षितरुपमा प्रभावकारी बन्न सकिरहेको छैन। नवौं योजना पश्चात गरिवी निवारणलाई मुल लक्ष्यकोरुपमा अंगीकार गर्दै आवधिक योजनाहरु संचालन हुँदै आएका छन्। विभिन्न सरकारी तथा गैरसरकारी एवं स्थानिय निकायहरुबाट गरिवी न्यूनीकरणलाई केन्द्रमा राखि लक्षित कार्यक्रमहरु पनि संचालन हुँदै आएका छन्। योजनाबद्ध विकास,सरकारको गरिबी केन्द्रित लगानी,सहकारी तथा नीजि क्षेत्र समेतको सकृयता एवं विप्रेषणबाट प्राप्त आम्दानी आदिका कारणबाट नेपालमा गरिवी न्यूनीकरण गर्दै लैजान सहयोग पुगेको छ। आ.व. २०६०/६१ मा नेपालमा ३०.०५ प्रतिशत जनसंख्या गरिवीको रेखा मूनि रहेकोमा तेस्रो नेपाल जिवनस्तर सर्वेक्षण ०६/६७ का अनुसार हाल सो संख्या २५.१६ प्रतिशतमा भरेको छ। गरिवी न्यूनीकरणको वर्तमान प्रवृत्तीलाई विचार गर्दा नेपालले गरिवी सम्बन्धी सहस्राब्दी विकास लक्ष्यलाई पुरा गर्न सक्ने देखिन्छ। सोही सर्वेक्षणका अनुसार आय असमानतालाई दर्शाउने Gini Coefficient ०.४४ बाट घटेर ०.३१ कायम भएको छ। तथापि करिव १२ लाख ५० हजार घरपरिवार अर्थात ७० लाख नेपालीहरु अझै पनि गरिवीको रेखामुनि रहेकाले राज्यका सामू गरिवी निवारणको गहन जिम्मेवारी कायमै रहेको छ। वर्षेनी करिव ४ लाख व्यक्ति रोजगारीका लागि बजारमा प्रवेश गर्दछन् काम गर्ने उमेरका करिव २५ लाख नेपाली पूर्ण वा अर्धवेराजगार रहेको देखिन्छ।

कूल गार्हस्थ उत्पादनमा एक तिहाइ हिस्सा ओगट्ने र करिव दुई तिहाइ जनसंख्याको प्रमुख आयस्रोतको रुपमा रहेको कृषि क्षेत्रका उत्पादकत्व अपेक्षित रुपमा बृद्धी गर्न सकिएको छैन। कृषिको व्यवसायिकरण तथा गैरकृषि क्षेत्रको विकास विस्तार मार्फत आय आर्जनका अवसरहरुको सृजना गरी वर्षेनी श्रम बजारमा भित्रिने श्रमशक्तिलाई सदुपयोग गर्न विशेष जोड दिनु पर्ने अवस्था छ।

विपन्न वर्गलाई लक्षित गरी नेपाल सरकारले गरिवी निवारण कोष, युवा तथा साना उद्यमी व्यवसायी स्वराजगार कोष तथा पश्चिम उच्च पहाडी गरिवी निवारण आयोजना जस्ता विभिन्न कार्यक्रमहरु मार्फत गरिवी निवारणका लक्षित कार्यक्रमहरु संचालनमा गर्दैआएको छ।

विशेषगरी लोपोन्मुख जाती, ग्रामिण वस्तीका दलित समुदाय, जन-जाति समूहका केही बाहेक सबै जन-जातिहरु, मूशिलम, ग्रामिण क्षेत्रका भूमिहिन किसान, दुर्गम क्षेत्रका बासिन्दाहरु, शहरी क्षेत्रका सुकुम्बासी श्रमिक तथा भरियाहरु, आर्थिक रुपले विपन्न महिलाहरु, शारिरिक रुपले अशक्त र अपाङ्गता भएका व्यक्तिहरु, एकल महिलाहरु, वादी, हरुवा चरुवा, मुक्त कमेया जस्ता समूह हरु गरिवीको दुष्चक्रबाट बढि प्रभावित भएको पाइएको हुँदा गरिवी निवारणका कार्यक्रमहरुमा यिनको सामूहिक र अर्थपूर्ण सहभागिता गराई अझ प्रभावकारीरुपमा लक्षित कार्यक्रमहरु संचालनमा ल्याउनु आवश्यक छ।

३. समस्या, चुनौती र अवसरहरु (Problem, Challenges and Opportunities)

सहकारी क्षेत्रको विकासका लागि विगतमा गरिएका प्रयासहरुबाट अपेक्षित उपलब्धी हासिल हुन सकेको छैन। सहकारी क्षेत्रमा औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षाको अभावका कारण सहकारी संघ संस्थाहरु सिद्धान्त र मूल्यहरुको अवलम्बनमा कमजोर देखिएका छन्। यस क्षेत्रमा तालिम प्राप्त जनशक्तिको अभाव रहेको छ। कृषिको व्यवसायिकता, सीप विकास एवं उद्यमशीलता जस्ता मान्यताले सहकारी क्षेत्रमा अपेक्षित रुपमा प्रवेश पाउन सकेको छैन। स्वरोजगार सृजना, आय आर्जन र व्यवसायको प्रवर्द्धन भन्दा अन्य अनुत्पादक क्षेत्रमा सहकारीहरुको लगानी बढि प्रवाहित भएको पाइएको छ। सहकारीको नियमन तथा अनुगमनका लागि आवस्यक पर्ने सहकारी ऐन, नियम तथा मापदण्डहरुको समय सापेक्ष सुधार र परिमार्जन हुन नसक्दा सहकारी क्षेत्रलाई स्वच्छ र मर्यादित बनाउन सकिएको छैन। सहकारी दर्ता, अनुगमन तथा नियमन र परामर्श सेवाका लागि हालसम्म सुगम ३८ जिल्लामा मात्र सहकारी कार्यालयहरुको स्थापना भएकोले सहकारीको उपयोगको आवशकता रहेका गरिव जनताहरुले सेवा पाउन नसकिरहेको अवस्था छ। सहकारी सम्बन्धी राष्ट्रिय नीतिको अभावमा आर्थिक विकासका अन्य सम्भावित क्षेत्रमा

सहकारी पद्धतिको अपेक्षित उपयोग सकेको छैन । स्थानीय निकायहरूबाट संचालित गरिवी निवारणका कार्यक्रमहरू सहकारी मार्फत परिचालन गर्ने र त्यस्ता कार्यक्रमले समेटेका अनौपचारिक समूहहरूलाई सहकारीकरण गरी दिगो रूपमा कार्यक्रमहरूको उपादेयता कायम राख्ने तर्फ गरिवी निवारण लक्षित कार्यक्रमहरूको ध्यान केन्द्रित गराउन सकिएको छैन ।

सहकारीको विकासका लागि गरिएको संबैधानिक व्यवस्था, सबै राजनैतिक दलहरूको सहकारी प्रतिको सकारात्मक दृष्टिकोण, सहकारी सम्बद्ध संघ संस्थाहरूको विकास सँगै सर्वसाधारण जनताहरूमा सहकारी पद्धति प्रतिको आकर्षण बढ्दै जानु एवं विश्व समुदाय समेत सहकारी प्रति सकारात्मक रहनु आदि कारणले सहकारी अर्थ व्यवस्थाको विकास, विस्तार र प्रवर्द्धनको कार्य अधि बढाउने सकारात्मक वातावरण तयार भएको छ । सहकारीको स्थानीय तहदेखि जिल्ला, केन्द्र र अन्तर्राष्ट्रिय तहसम्म संगठन संजाल निर्माण भएको छ । गरिवी निवारणको क्षेत्रमा समेत लक्षित कार्यक्रमहरूको प्रभावकारिताको लागि गाँउ गाँउमा स्थापना भएका सहकारीको माध्यमबाट कार्यक्रमहरू अधि बढाउन सजिलो बन्दै गएको छ । कार्यक्रमको दिगोपनाको लागि समूहहरूलाई सहकारी गठन गर्न गराउन पनि सजिलो भएको छ । यसैले पनि सहकारी र गरिवी निवारणको काम एउटै मन्त्रालयको कार्यक्षेत्र बनाइनु सान्दर्भिक देखिएको छ । स्थानिय साधन श्रोत परिचालन गरी सहकारीको माध्यमबाट गरिवी निवारण तथा सामाजिक समस्याहरू निराकरणमा यो गदान पुग्ने साथै नेपाल सरकारलाई पनि संगठित संस्थाहरू मार्फत गरिवी निवारण तथा अन्य सामाजिक सुधारको काममा योगदान पुऱ्याउन सहज वातावरण भएको छ ।

गरिवी निवारणको लागि राज्यका प्रयाशहरूबाट गरिवीको अवस्थामा सुधार आएको भएतापनि अबै पनि गरिवीको आकार र प्रवृत्ति गम्भिर अवस्थामा रहेको छ । वर्षौं देखिको सामाजिक तथा आर्थिक विभेद र असमानता, विकट भौगोलिक अवस्थिती र भूपरिवेष्ठिता, अर्थतन्त्रका सरंचनात्मक कमजोरीहरू, न्यून आर्थिक बृद्धी, सुशासनको अभाव तथा सेवा प्रवाह प्रणालीका कमजोरी एवं फितला लक्षित कार्यक्रमहरू गरिवी निवारणको क्षेत्रमा रहेका केही प्रमुख समस्याहरू हुन् ।

करिव एक चौथाई घरपरिवार गरिवीको रेखामून हुनु सबैभन्दा चुनौतिको विषय हो । त्यस्तै दिगो उच्च फराकिलो आर्थिक वृद्धि कायम गर्ने, आन्तरिक तथा बाह्य लगानी बढाउने, लक्षित कार्यक्रमहरूलाई अझ प्रभावकारी बनाउने, गरिवी निवारणका कार्यक्रमहरूबीच अन्तर निकाय समन्वय प्रभावकारी बनाउने अनुगमन तथा मूल्यांकन व्यवस्थाको सुदृढीकरण जस्ता चुनौतीहरू पनि हाम्रा सामु छन् ।

यिनै समस्या तथा चुनौतीहरूलाई ध्यानमा राखि गरिवी निवारणलाई निरन्तररूपमा योजनाबद्ध प्रयाशको मुल उद्देश्यको रूपमा राख्दै सरकारका सम्पूर्ण कार्यक्रमहरू गरिवी निवारण तर्फ परिलक्षित गरिएका छन् । गरिवी न्यूनीकरणका कार्यक्रमहरूमा दातृनिकायको सहयोग र प्रतिबद्धता पनि निरन्तररूपमा जारी छ । नेपाल श्रमशक्ति सर्वेक्षण २०६५/६६ का अनुसार देशमा कुल जनसंख्याको ठूलो हिस्सा अर्थात् १५ वर्षवा सो भन्दा माथिको करिव ८३.४ प्रतिशत जनसंख्या आर्थिक रूपले सकृय छ । यससँगसगै आन्तरिक तथा बाह्य पूंजी एवं विप्रेषणबाट प्राप्त आम्दानीलाई उत्पादनमूलक क्षेत्रमा लगानी गर्ने उपयुक्त वातावरण निर्माण गर्न सकिएमा जनताको जिवनस्तरमा सकारात्मक परिवर्तन ल्याउन सकिने सम्भावना बढेको छ ।

४. दुरदृष्टि (vision)

सबल र सक्षम सहकारी प्रणाली सहितको गरिवीमूक्त नेपाली समाज ।

५. परिलक्ष्य (Mission)

राष्ट्रिय अर्थतन्त्र र गरिवी निवारणमा योगदान बढाउने गरी सहकारी प्रणालीको सबलीकरण गर्ने एवं गरिवी न्यूनीकरणको कार्यमा नेतृत्वदायी भूमिका निर्वाह गर्ने ।

६. उद्देश्य (Objectives)

- ६.१ समुदायमा रहेको आर्थिक एवं सामाजिक पूंजीको अधिकतम उपयोग हुने गरी सहकारीको विकास, विस्तार र प्रवर्धन गर्ने ।
- ६.२ सन् २०१७ सम्ममा गरिवीको रेखामूनी रहेको जनसंख्या १० प्रतिशतमा ल्याउने राष्ट्रिय लक्ष प्राप्त गर्न सहयोग गर्ने ।

७. रणनीतिहरू (Strategies)

सहकारी तर्फ

- ७.१. गरिवी निवारणको सन्दर्भमा सहकारी क्षेत्रको योगदानलाई ध्यानमा राख्दै सहकारीलाई उत्पादन वृद्धि, गरिवी तथा असमानता न्यूनीकरण र सामाजिक न्याय प्रवर्धन गर्ने एक प्रमुख माध्यमको रूपमा विकास गर्ने ।
- ७.२ कृषि, उद्योग तथा सेवा क्षेत्रमा सहकारी क्षेत्रको लगानीलाई संख्यात्मक भन्दा गुणात्मक पक्षमा अझ जोड दिदै आयआर्जनका अवसरहरूको सृजना गर्दै बेरोजगारी घटाउन सहयोग गर्ने ।
- ७.३ सहकारी संघ संस्थाहरूको स्थापना र सञ्चालनका आधार र मापदण्डहरू स्पष्टरूपले परिभाषित गरी सुचकहरूको आधारमा सहकारी संघ/संस्थाहरूको स्वनियमन तथा प्रभावकारी रूपमा अनुगमन मूल्याङ्कन गर्ने प्रणालीको विकास गर्ने ।

- ७.४ शिक्षा, तालिम र सूचनाको माध्यमबाट सहकारीको संस्थागत क्षमता विकास र आम नागरिकहरु एवं वचतकर्ताहरुमा सहकारी सम्बन्धी चेतना अभिवृद्धि गर्ने ।
- ७.५ महिला, गरीब, सीमान्तकृत, अपाङ्ग, भूमिहीन तथा पिछडिएको वर्ग र श्रमिकहरुका साथै आम नागरिकहरुको जीवनस्तरमा सुधार ल्याउन सहकारीको पहुँच पुऱ्याउने ।
- ७.६ सहकारी क्षेत्रमा प्रभावकारी व्यवस्थापन विधिको अवलम्बन तथा नियमन मार्फत सुशासन कायम गर्ने ।
- ७.७ सहकारीको विकास, विस्तार र प्रवर्द्धन गर्न सरकार, सहकारी, निजीक्षेत्र तथा विकास साभेदारहरु बीच सहकार्य र सहयोगलाई प्रवर्द्धन गर्ने ।
- ७.८ सहकारीको विकासका लागि दीर्घकालीन योजना, मानव संसाधन विकास, आवश्यक संगठन संरचनाहरुको निर्माण एवं कानूनी व्यवस्थाहरु गर्ने ।

गरिवी निवारण तर्फ

- ७.९ गरिवी न्यूनीकरण सम्बन्धी नीति तथा कार्यक्रमहरुको पुनसंरचना एवं प्राथमिकरण गर्दै सम्बद्ध नीति तथा कार्यक्रमहरुलाई अझ बढी पूर्वानुमानयोग्य (More Predictable) बढाउने ।
- ७.१० देशका समग्र आर्थिक सामाजिक कृयाकलापहरु र दिगो एवं फराकिलो आर्थिक वृद्धि मार्फत सृजना हुने रोजगारी लगायतका सम्पूर्ण अवसरहरुको न्यायोचित वितरण हुने गरी सम्बद्ध सबै क्षेत्रगत नीतिहरुलाई परिर्लक्षित गर्ने ।
- ७.११ राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय लगानी, वैदेशिक सहयोग एवं गैरसरकारी संघ संस्थाहरुका बीच प्रभावकारी समन्वय र सहकार्यलाई सुदृढ गर्दै गरीबी न्यूनीकरणका लागि स्रोत परिचालन गर्न रचनात्मक भूमिका निर्वाह गर्ने ।
- ७.१२ विभिन्न सरकारी तथा गैरसरकारी निकायहरुबाट संचालित गरिवी निवारणका कार्यक्रमहरुको समन्वय गर्दै कार्यन्वयनमा प्रभावकारिता ल्याउने ।
- ७.१३ गरिवको पहिचान एवं वर्गीकरण गरी सीमान्त गरिवहरुको लागि उपयुक्त नीति र कार्यक्रमहरुको निर्धारण गरी विभिन्न समुदाय र क्षेत्रमा रहेको धनी र गरिव बीचको खाडल कम हुने किसिमका कार्यक्रमहरु तय गर्ने ।

- ७.१४ गरिवी निवारणमा सहयोग पुऱ्याउने कार्यक्रम संचालन गर्न अन्तर्राष्ट्रिय संघ संस्था तथा विकास साभेदारसंग समन्वय र सम्बन्ध विस्तार गर्ने ।

८. कृयाकलापहरु (Activities)

सहकारी तर्फ

- ८.१ सहकारी क्षेत्रको स्वस्थ विकास एवं विस्तारका लागि आवश्यक दिशानिर्देश प्रदान गर्न राष्ट्रिय सहकारी नीतिको निर्माण गर्ने एवं सो समेतको आधारमा विद्यमान सहकारी ऐन तथा नियमावलीमा आवश्यक संशोधन गर्ने ।
- ८.२ आम जनतामा गुणस्तरीय सेवा पुऱ्याउनका लागि सहकारीको विद्यमान संस्थागत संरचना र कार्य प्रकृयाहरुमा सुधार एवं पुनः संरचना गर्ने ।
- ८.३ क्षेत्रियस्तरमा पाँचै विकास क्षेत्रमा रहेका सहकारी प्रशिक्षण केन्द्रहरुको स्तरवृद्धि गरी साधनस्रोत सम्पन्न बनाउने ।
- ८.४ राष्ट्रिय सहकारी विकास बोर्डलाई सहकारी क्षेत्रको प्रभावकारी अनुसन्धानमूलक तथा प्रवर्द्धनात्मक संस्था (तज्ज्ञत्व त्वलप) को रूपमा विकास गर्ने ।
- ८.५ सहकारी सम्बन्धी जनचेतना अभिवृद्धिका लागि सरकार, स्थानीय निकाय, सहकारी क्षेत्र, नागरिक समाज, विकास साभेदार, शैक्षिक क्षेत्र, सञ्चार जगतका साथै सम्बद्ध सामाजिक संघ संस्थाहरुको परिचालन गर्ने ।
- ८.६ सहकारीको लागि आवश्यक पर्ने व्यवसायिक जनशक्ति तयार हुनसक्ने अनुकूल वातावरण निर्माणका लागि सहकारी शिक्षालाई माध्यमिक तह देखि उच्च शिक्षा सम्मको पाठ्यक्रममा समावेश गराउन पहल गर्ने ।
- ८.७ सहकारीमा आवद्ध विपन्न महिला, सीमान्तकृत, गरिव समुदाय, अपाङ्ग, भूमिहीन तथा पिछडिएको समुदाय र श्रमिकहरुलाई स्वरोजगारमूलक उद्योग तथा व्यवसाय स्थापना गर्न आवश्यक पर्ने व्यावसायिक तथा सीपमूलक तालिमहरु प्रदान गर्न कार्यक्रमहरु संचालन गर्ने ।
- ८.८ विपन्न समुदायका व्यक्तिहरुको सहभागिता र बाहुल्यता रहेका सहकारी संस्थाहरु परिचालन गरी गरिवी निवारणका क्रियाकलाप संचालन गर्न सरकारका सम्बद्ध निकायहरु र विकास साभेदार हरूलाई अभिप्रेरित गर्ने ।

- ८.९ सहकारीहरूलाई विषयगत कार्यक्षेत्र, भौगोलिक क्षेत्र, जनसहभागिता, सुशासन र कारोवारको आधारमा वर्गीकरण गरी सोही आधारमा सहयोग उपलब्ध गराउने प्रणालीको विकास गर्ने ।
- ८.१० सहकारी संघ संस्थाहरूको प्रभावकारी अनुगमन एवं मूल्यांकन गर्ने प्रयोजनका लागि स्पष्ट स्पष्ट सुचक सहितको मापदण्ड र कार्यविधिहरूको निर्माण गरी कार्यान्वयनमा ल्याउने ।
- ८.११ सहकारी क्षेत्रको विकास, विस्तार र प्रवर्द्धनमा महत्वपूर्ण योगदान पुऱ्याउने निकाय र व्यक्तिहरूलाई सम्मान तथा पुरस्कृत गर्न मन्त्रालयमा प्रोत्साहन कोषको स्थापना गर्ने ।
- ८.१२ आपूर्ति प्रणालीमा स्वस्थ प्रतिस्पर्धा कायम गर्ने थोक तथा खुद्रा सहकारी बजारहरूको स्थापना गर्न प्रोत्साहन गर्ने ।
- ८.१३ सहकारी उद्योग व्यवसायको विकास र विस्तारका लागि उपयुक्त कर नीति अवलम्बनका लागि पृष्ठपोषण गर्ने ।
- ८.१४ बचत तथा ऋण सहकारीको कारोवारलाई सुरक्षित र भरपर्दो बनाउन राष्ट्र बैकसँग समेत सहकार्य गरी सघन अनुगमन र नियमनको प्रभावकारी व्यवस्था गर्ने ।
- ८.१५ सहकारीमा आवद्ध महिला तथा लक्षित समूहद्वारा सञ्चालन गरिने उद्योगहरूका लागि विउ पूँजीको व्यवस्थापन एवं व्यावसायिक क्षमता अभिवृद्धि गर्न सहूलियतपूर्ण ऋण तथा पूँजीगत अनुदान र अन्य सहयोग उपलब्ध गराउने ।
- ८.१६ सहकारी संस्थाहरूबीच अन्तर व्यवसायिक सम्बन्ध विस्तारका लागि अभिप्रेरित गर्ने ।
- ८.१७ सहकारी क्षेत्रको विकास र विस्तारका लागि विभिन्न अनुसन्धान एवं सम्भाव्यता अध्ययनका कार्यहरूलाई अगाडि बढाउने ।
- ८.२० अन्तराष्ट्रिय क्षेत्रमा आएका नविन मान्यताहरूलाई समेत ध्यानमा राखि गरिवी मापनका आधारहरू निर्धारण गर्ने एवं समसामयिक बनाउने ।
- ८.२१ राष्ट्रिय गरिवी सर्वेक्षण कार्यक्रम मार्फत पारिवारिकस्तर सम्म पुग्नेगरी सीमान्तकृत, विभिन्न वर्ग र समुदायमा रहेका गरिवहरूको पहिचान एवं नक्शाकन गर्ने ।
- ८.२२ विभिन्न सरकारी तथा गैरसरकारी क्षेत्रबाट प्रत्यक्षरूपमा गरिवी न्यूनीकरणलाई सघाउ पुग्ने गरी संचालित कार्यक्रमहरूको विस्तृत डाटाबेस (Database) तयार पार्ने ।
- ८.३० रोजगारीमूलक सीपमूलक कार्यक्रमहरू संचालन गर्ने, गराउने ।
- ८.२३ गरिव समुदाय र सीमान्त गरिवहरूको आवश्यकता लेखा जोखा (Needs Assessment) र सभावनाको पहिचान गरी सो अनुसार लक्षित कार्यक्रम संचालन गर्ने ।
- ८.२४ सहकारी अन्तर्गत विशेष लघुवित्त कार्यक्रम मार्फत गरिवहरूको सहलियतपूर्ण ऋणमा पहुंच बृद्धि गर्ने ।
- ८.२५ विभिन्न निकायहरूबाट संचालित गरिवी निवारणका कार्यक्रमहरूमा प्रभावकारी समन्वय स्थापित गर्न अन्तर निकाय समन्वयको रूपरेखा (Inter Governmental Coordination Framework) को निर्माण गर्ने ।
- ८.२६ विभिन्न सरकारी निकाय तथा गैरसरकारी संघसंस्थाहरूबाट संचालित गरिवी निवारणका कार्यक्रमहरूको प्रभावकारी अनुगमन तथा मूल्यांकनका लागि निश्चित आधारहरूको विकास गर्ने ।
- ८.२७ गरिव समुदाय एवं व्यक्तिको आवश्यकता चाहना र सभावनाको पहिचान गर्ने ।

गरिवी निवारण तर्फ

- ८.१८ गरिवी न्यूनीकरणसँग प्रत्यक्षरूपमा सम्बन्धित कार्यक्रम तथा आयोजनाहरूको प्राथमिकरण गरी सोही अनुसार सरकारी लगानी तथा बैदेशिक सहयोगलाई परिलक्षित गर्न सघाउ पुऱ्याउने ।
- ८.१९ वर्तमान सन्दर्भमा राष्ट्रिय परिवेश सुहाउदो गरिवीको परिभाषा गर्दै एकिकृत राष्ट्रिय गरिवी निवारण नीतिको तर्जुमा गर्ने ।
- ८.२८ दातृविकाय, गै स स, नीजी, सहकारी एवं स्थानिय निकायहरूलाई गरिव केन्द्रित कार्यक्रम संचालन गर्न प्रोत्साहित गर्ने ।
- ८.२९ गरिवी न्यूनीकरणको आवधिक कार्य योजना बनाई कार्यान्वयन गर्ने ।

राष्ट्रिय एवं अन्तर्राष्ट्रिय सभा/सम्मेलन/गोष्ठी/तालिम/सेमिनार

- सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालय र युनिभर्सल पिस फेडरेसन नेपालको संयुक्त आयोजनामा शान्ति दिगो विकास र गरिवी निवारणको लागि नविन प्रस्ताव विषयक २ दिने अन्तर्राष्ट्रिय नेतृत्व सम्मेलन २०६९ भाद्र १६-१७ मा काठमाण्डौमा सम्पन्न भयो । सम्मेलनमा भारत, अमेरिका, थाईलैण्ड, दक्षिण कोरिया लगाय २७ मुलुकका ३५० प्रतिनिधिहरुको सहभागिता रहेको र सम्मेलनमा शान्ति र विकास सम्बन्धी ८ वटा छुट्टाछुट्टै कार्य पत्र प्रस्तुत भएको थियो ।



मन्त्रालयका सहसचिव सुदर्शन प्रसाद ढकालको कार्यपत्र प्रस्तुत गर्दै



सम्माननीय उपराष्ट्रपति परमानन्द भ्वा को साथमा माननीय मन्त्री एकनाथ ढकाल ज्यू लगायत



सम्माननीय उपराष्ट्रपति परमानन्द भ्वा द्वारा सम्मेलनको समुद्घाटन गर्दै ।

- वचत तथा ऋण सहकारी संस्थाहरुको अनुगमनलाई प्रभावकारी बनाउने उद्देश्यले PEARLS लगायतका अनुगमन विधिहरु बारे सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालय र सहकारी विभागका अधिकृत तथा सहायक स्तरका कर्मचारीहरुलाई मिति २०६९।६।११ देखि ५ दिने अभिमुखिकरण कार्यक्रम सम्पन्न भयो ।



अभिमुखिकरण कार्यक्रममा उपस्थित सहभागीहरु



सम्मेलनमा उपस्थित सहभागीहरु

- सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालय र राष्ट्रिय सहकारी संघको संयुक्त आयोजनामा मिति २०६९ भाद्र १८-१९ मा काठमाडौंमा Co-operative trend And Development in Asia and The Pacific Region विषयक अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन सम्पन्न भयो । उक्त सम्मेलनमा स्वदेशी एवं विदेशी गरी १५० जनाको सहभागिता रहेको थियो । राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय स्तर का सहकारी विज्ञहरुद्वारा उक्त सम्मेलनमा सहकारी विषयक ४ वटा कार्यपत्र प्रस्तुत गरिएको थियो ।

- International Summit of Cooperatives, Canada द्वारा क्यानडाको क्यूबेकमा आयो जना भएको 2012 International Summit of Cooperatives, Oct 8-11, Imagine 2012, Oct 6-8 विषयक सहकारी सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनमा माननीय सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्री एकनाथ ढकालज्यूको नेतृत्वमा मन्त्रालयका सहसचिव श्री सुदर्शन प्रसाद ढकाल सहितको टोलीले भाग लिएको थियो । विश्वमा पहिलो पटक आयोजना भएको अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी शीखर सम्मेलनले बजार अर्थव्यवस्थाले सिर्जना गरेको आर्थिक संकटको विकल्पको रूपमा सहकारी

अर्थव्यवस्थाको विकास गर्नु पर्ने निष्कर्ष निकालेको थियो । उक्त समिटमा भएको नेपालको सहभागिताले सहकारी अर्थव्यवस्थाको विकास, विस्तार र प्रवर्द्धनको कार्यलाई विश्वव्यापी स्वीकार गरिएको सहकारीको ७ वटा सिद्धान्त र उत्कृष्ट अभ्यासहरूको अनुसरणबाट नेपालको सहकारी अभियान अघि बढाउन थप उत्साहित भएको छ ।



मा. मन्त्री श्री एकनाथ ढकालज्यूको साथमा सम्मेलनका विशिष्ट व्यक्तित्वहरू

आयोजना/कार्यक्रम तथा बजेट

सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालय र अन्तर्गतका निकाय तथा आयोजनाहरूको चालु आर्थिक वर्ष २०६९/०७० को एक तृतीयांश विनियोजन बजेट देहायको तालिका बमोजिम रहेको छ :

| सि.न. | निकाय | २०६९/०७० को एक तृतीयांश बजेट (रु.हजारमा) |
|-------|---------------------------------------|--|
| १. | सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालय | १२३०० |
| २. | सहकारी विभाग | १०७५४० |
| ३. | राष्ट्रिय सहकारी विकास बोर्ड | ९७०० |
| ४. | पश्चिम उच्च पहाडी गरिवी निवारण आयोजना | १४८३२ \$ |

पश्चिम उच्च पहाडी गरिवी निवारण आयोजना :

चालु आ.व. २०६९।०७० देखि पश्चिम उच्च पहाडी गरिवी निवारण आयोजना स्थानीय विकास मन्त्रालयबाट यस मन्त्रालयमा स्थानान्तरण भएको छ । यस आयोजनामा दातृ संस्था कृषि विकासका लागि अन्तराष्ट्रिय कोष (IFAD) र नेपाल सरकारको सयुक्त

लगानी रहेको छ । ३ चरण मा सम्पन्न हुने यो आयोजना हाल तेश्रो चरणमा रहेको छ । तेश्रो चरणको हालको आयोजनाको अवधि (२०११-२०१४) रहेको छ । तेश्रो चरणमा छनौट भएका पश्चिम उच्च पहाडी जिल्लाहरूमा बभाङ, बाजुरा, हुम्ला, कालिकोट, जाजरकोट, दैलेख, रोल्पा र रुकुम छानिएका छन् । ती जिल्लाहरूका १२५ गा.वि.स.हरूलाई समेटिएको छ । अधिकारमुखि अवधारणा बमोजिम सामुदायिक संघ/संस्थाहरूको गठन र तिनको संस्थागत सदृढिकरणको माध्यमबाट सशक्तिकरण गरी उनीहरूको प्राकृतिक,भौतिक र वित्तिय स्रोतको परिचालनका लागि गरिवी निवारणमा केन्द्रित रहनु आयोजनाको उद्देश्य रहेको छ । आयोजनाको लक्षित समुह भनेको आयोजना क्षेत्रभित्र बसोवास गर्ने भूमिहिन सिमान्तकृत किसानहरू, महिला, बालबालिका तथा युवाहरू र पिछडिएका वर्ग हुन । आयोजनाको जिल्ला प्रमुख सम्बन्धीत जिल्लाको स्थानीय विकास अधिकारी रहने व्यवस्था रहेको छ । हाल यस आयोजनामा जम्मा १६९ जना कर्मचारी रहेका छन् । तेश्रो चरण अन्तर्गत १ करोड ४८ लाख ३२ हजार अमेरिकी डलर बजेट मध्ये नेपाल सरकारको ४१ लाख ८० हजार डलर रहेको छ । आयोजना (तेश्रो चरण) को सम्पर्क कार्यालय नेपालगंजमा राखिएको छ ।

अनुगमन/मूल्यांकन

◆ मन्त्रालयका सह-सचिव श्री कृष्ण प्रसाद लम्साल ज्यूले मिति २०६९ भाद्र ३ देखि ७ गतेसम्म कास्की जिल्ला स्थित डिभिजन सहकारी कार्यालयको अनुगमन/निरीक्षण गर्नु भएको थियो ।

◆ यस मन्त्रालयका उप-सचिव श्री सानुकाजी देसार, लेखा अधिकृत श्री जगन्नाथ शर्मा पौडेल र शाखा अधिकृत श्री लक्ष्मी नारायण बैद्य सम्मिलित निरीक्षण टोलीले २०६९ असोजमा डिभिजन सहकारी कार्यालय, काभ्रेको कार्यालय निरीक्षण गर्नुका साथै काभ्रे जिल्ला स्थित Access Brand Bronze प्राप्त गर्न सफल तीन वटा बचत तथा ऋण सहकारी संस्था लि.को अनुगमन गरेका थिए । कार्यालय निरीक्षणको क्रममा डिभिजन सहकारी कार्यालय काभ्रे लामो समय देखि आफ्नै भवनको अभावमा भाडामा बसीरहेको पाइयो ।

एशियाली ऋण महासंघको प्राविधिक सहयोगमा नेपाल बचत तथा ऋण केन्द्रीय सहकारी संघ लि. द्वारा आयोजित नेपालका सहकारीहरूलाई अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा पुचाउने Access

Branding (A one Competition Choice for Excellence in Service and Soundness) कार्यक्रममा सन् २०१२ मा नेपालका ७ वटा बचत तथा ऋण सहकारी संस्था सहभागी भएकोमा ५ वटा बचत तथा ऋण सहकारी संस्थाले उक्त Access Brand Bronze हासिल गर्न सफल रहेको र सो मध्ये काभ्रे स्थित बुडोल सामुदायिक बचत तथा ऋण सहकारी संस्था लि., बिन्धवासिनी बचत तथा ऋण सहकारी संस्था लि. र सामुदायिक बचत तथा ऋण सहकारी संस्था लि. ले उक्त सम्मान हासिल गरेको थियो । उक्त Access Brand Bronze हासिल गर्न सफल संस्थाहरूको तुलनात्मक विवरण देहायको तालिकामा देखाईएको छ । संस्था अनुगमनको क्रममा उक्त संस्थाहरूले बचत तथा ऋण सहकारी संस्थालाई थप प्रवर्द्धन गर्नका लागि लाभांश कर लगायत अन्य करहरूमा सरकारले छुट दिनु पर्ने माग राखेका थिए ।

Access Brand Bronze प्राप्त गरेका काभ्रेपलान्चोक स्थित तीन वटा सहकारी संस्थाहरुको तुलनात्मक प्रगती विवरण (२०६९ आषाढ मसान्त सम्म)

| विवरण | बुडोल सामुदायिक ब.तथा ऋ.स.सं.लि., बुडोल, काभ्रे | विन्धवासिनी बचत सहकारी संस्था.लि., पनौती, काभ्रे | सामुदायिक ब.तथा ऋ.स.सं.लि.पनौती, काभ्रे |
|--|---|--|--|
| सदस्य विवरण | | | |
| क) पुरुष | ८६७ | ३६७६ | ४१४५ |
| ख) महिला | १३४५ | ८२८१ | ३५९५ |
| ग) संस्थागत | १६ | ३५ | |
| घ) संरक्षित सदस्य :- | १०२७ (बाल सदस्य) | १४७ | |
| ङ) अन्य :- | - | १८१ | २६ |
| जम्मा - | ३२५५ | १२३३२ | ७७६६ |
| शेयर बचत तथा पूँजी संकलन | | | |
| क) शेयर पूँजी :- | २६०६६१००।०० | ६६१४०१००।- | ४७६५६०००।- |
| ख) जगेडा तथा अन्य कोष :- | ९५८३८१६।४६ | ४०७६९६१७।२९ | २८४७६१०१।६५ |
| ग) बचत तथा निक्षेप :- | १५५९३४६१।९३ | ४५३५९१४९०।२८ | ३१४८९८,९११।- |
| घ) अन्य दायित्व :- | २२३३०१०।०० | ९९०८६०९।३६ | ४४१८९२५।७० |
| जम्मा :- | ६२३०३९०।६६ | ५६९४३५०५।७। | ७५९०२२४।१२ |
| ङ) संचालन बचत (मुनाफा) :- | | १०००२९५५।०७ | |
| ऋण लगानी तथा असुली | | | |
| क) लगानी :- | १६,०१,०७,६१७।६४ | ५३३८७३१०।७।- | ३१४९२२२२।०० |
| ख) असुली :- | | ४५०८६१५१।- | |
| ग) लगानीमा बाकी :- | | ४०८४११२७।९।- | |
| प्रशासनिक तथा कर्मचारी खर्च | ३७०९४७०.६५ | १२८०८३९०.८७ | १३३५४९५८।३६ |
| तरलता प्रतिशत | २२.०४% | २०.२८% | २२.४१% |
| भाखा नाघेको ऋण/लगानीमा रहको ऋण रकम | १.७१ % | ० | १.५९ % |
| वृद्धि दर (प्रतिशतमा) | | | |
| क) सदस्य संख्या | ९.३०% | १४.४३ % | २३.५१% |
| ख) कूल सम्पती | १३.८१ % | ३२.६४% | ४९.४५% |
| कार्यक्षेत्र | बनेपा , धुलिखेल, र पनौती न.पा. | जिल्लाभर | पनौती न.पा., कुशादेवी, भूमिडाँडा चलाल गणेशान, महेन्द्रज्योती र उग्रतारा जनागल गा.वि.स. |
| लिने दिने व्याज दर विच औसत फरक प्रतिशत | ५.५% | ५% | ५% |
| कर्मचारी संख्या | १० जना | ३२ जना | २६ जना |

- ◆ मन्त्रालयका शाखा अधिकृत श्री रुक्मागत अर्याल नेतृत्वको टोलीले पाल्पा स्थित सहकारी संस्थाहरूको अनुगमन तथा डिभिजन सहकारी कार्यालय, पाल्पाको निरीक्षण (मिति २०६९।६।२६ देखि २०६९।६।२ सम्म) सम्पन्न गरी प्रतिवेदन पेश गरेको ।

- ◆ मन्त्रालयका शाखा अधिकृत श्री भरत ढकाल को नेतृत्वको टोलीले (२०६९।६।२६ देखि २०६९।७।२ सम्म) डिभिजन सहकारी कार्यालय, धादिङको निरीक्षण अनुगमन गरी प्रतिवेदन पेश गरेको ।

समाचार

- ◆ नवनियुक्त सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्री माननीय श्री एकनाथ ढकालज्यूले नवगठित सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालयको मिति २०६९जेष्ठ ७ गते पद बहाली गर्नुभयो ।
- ◆ सहकारी तथा गरिवी निवारण सचिव श्री केशव प्रसाद भट्टराईज्यूले नवगठित सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालयको मिति २०६९ जेष्ठ ७ गते पद बहाली गर्नुभयो ।
- ◆ मन्त्रालयको प्रवक्ता तथा सूचना अधिकारीमा सह-सचिव श्री सुदर्शन प्रसाद ढकाल र सह-प्रवक्ता तथा सहायक सूचना अधिकारीमा उप-सचिव श्री सानुकाजी देसारलाई तोकिएको ।
- ◆ नेपाल सरकारको मन्त्रालय तथा केन्द्रीय निकायहरूमा गरिवी निवारण सम्पर्क व्यक्ति तोकिएको पठाउन अनुरोध गरिएको ।
- ◆ अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी वर्ष, २०१२ को वेब साईट WWW.icy2012 निर्माण गरिएको छ । यस वेब साईटमा सहकारी वर्षका उपलक्ष्यमा मन्त्रालयले सम्पन्न गरेका विविध गतिविधि एवं कार्यक्रमको जानकारी राखिएको छ ।
- ◆ मन्त्रालय र मातहतका निकायमा कार्यरत कर्मचारीहरूको सरुवालाई व्यवस्थित बनाउन सरुवा सम्बन्धी मापदण्ड, २०६९ तयार गरी लागु गरिएको ।
- ◆ मन्त्रालयमा अनुगमन तथा मूल्यांकन इकाई गठन गरी अनुगमन तथा मूल्यांकन सुचकहरू तयार गरिएको ।
- ◆ नवगठित सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रालयको कार्यक्षेत्र (Scoping) तयार गरिएको ।
- ◆ वडा दशै २०६९ को उपलक्ष्यमा दैनिक उपभोग्य सामग्रीहरूको आपूर्ति व्यवस्थालाई प्रभावकारी बनाउन मिति २०६९।५।१० मा सहकारी तथा गरिवी निवारण मन्त्रज्यूको अध्यक्षतामा बैठक बसी काठमाडौं उपत्यका लगायत नेपाल राज्यभरका मुख्य बजारस्थलहरूमा

सहकारी संघ/संस्थाहरू मार्फत सुपथ मूल्यमा तरकारी, फलफुल लगायत दैनिक उपभोग्य वस्तुहरू विक्री: वितरण गर्न घुम्ती पसलहरू संचालनका लागि सहकारी संघ/संस्थाहरूलाई सक्रिय बनाउने लगायतका निर्णयहरू भएको थियो ।

- ◆ नेपाल सरकारको मिति २०६९।७।२ को निर्णयानुसार सचिव पदमा बहुवा हुनु भई यस मन्त्रालयमा पदस्थापना हुनुभएका सचिव श्री रण वहादुर श्रेष्ठज्यूलाई मिति २०६९।७।१५ मा स्वागत तथा पदबहाली भयो ।



नवनियुक्त सचिव श्री रण वहादुर श्रेष्ठज्यूलाई मन्त्रालयमा स्वागत गरिदै

- ◆ नेपाल सरकारको मिति २०६९।७।२ को निर्णयानुसार यस मन्त्रालयबाट वातावरण, विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालयमा सरुवा हुनुभएका सचिव श्री केशव प्रसाद भट्टराईज्यूको मिति २०६९।७।१५ मा बिदाई गरियो।



सचिव श्री केशव प्रसाद भट्टराईज्यू लाई बिदाई गरिदै

सहकारी संघ/संस्थाहरूको पछिल्लो वितरण (२०६८ आश्विन मसान्त सम्मको)

| सि.नं. | संस्थाहरूको विवरण | संख्या |
|--------|-----------------------------|--------|
| १. | प्रारम्भिक सहकारी संस्थाहरू | २६,६६० |
| २. | जिल्ला सहकारी संघहरू | २४० |
| ३. | विषयगत केन्द्रिय संघहरू | १६ |
| ४. | राष्ट्रिय सहकारी संघ | १ |
| ५. | राष्ट्रिय सहकारी बैंक | १ |

सूचना/विज्ञप्ति आदि :

नेपाल सरकार

सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालय

अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी वर्ष, २०१२ राष्ट्रिय समितिको सचिवालयको

उत्कृष्ट सहकारी संघ संस्थाको प्रोफाइल तयारी सम्बन्धी जरुरी सूचना

संयुक्त राष्ट्र संघले घोषणा गरेको अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी वर्ष, २०१२ लाई विविध कार्यक्रमहरूको आयोजना गरी भव्यतापूर्वक सहकारी प्रबर्द्धनका लागि उपयोग गर्ने राष्ट्रिय सौचका साथ माननीय सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रीको अध्यक्षतामा राष्ट्रिय समितिको गठन भई सोही समितिले स्वीकृत गरे बमोजिम विभिन्न कार्यक्रमहरू सम्पन्न हुँदै आइरहेका छन्। यसै सन्दर्भमा नेपालका उत्कृष्ट सहकारी संघ संस्थाहरूको प्रोफाइल तयार गरी प्रकाशन गर्ने कार्यक्रम रहेकोले सम्बन्धित सहकारी संघ संस्थाहरूले तोकिएको ढाँचामा आर्थिक वर्ष २०६८/०६९

मा आधारित विवरणहरू सूचना प्रकाशन भएको मितिले ३० दिनभित्र सम्बन्धित डिभिजन सहकारी कार्यालयहरूमाफत यस मन्त्रालयको सहकारी प्रबर्द्धन शाखामा आइपुग्ने गरी पठाई उक्त कार्यमा सहयोग पुऱ्याउनु हुन सूचित गरिएको छ। विवरण पठाउने फाराम यस मन्त्रालयको वेबसाइट www.mocpa.gov.np बाट डाउनलोड गर्न तथा सम्बन्धित डिभिजन सहकारी कार्यालयहरूबाट प्राप्त गर्न सकिने छ। सबै डिभिजन सहकारी कार्यालय तथा केन्द्रिय एवं जिल्ला तहका सहकारी संघहरूले उक्त कार्यमा सहजीकरण गर्नु हुन निर्देश गरिएको छ।



सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालय

“आपूर्ति व्यवस्थापनमा सहकारीको भूमिका” विषयक छलफल कार्यक्रम सम्बन्धी
प्रेस विज्ञप्ति

भाद्र १०, काठमाडौं।

सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालयले तरकारी, फलफूल लगायतका दैनिक उपभोगका वस्तुहरूको आपूर्तिलाई व्यवस्थित गर्न कृषि तथा उपभोक्ता सहकारी संघ संस्थाहरूको भूमिका प्रभावकारी बनाउन सम्बन्धित सरोकारवालाहरूबीच छलफल गरी उपयुक्त उपायहरू अबलम्बन गर्ने उद्देश्यले “आपूर्ति व्यवस्थापनमा सहकारीको भूमिका” विषयक एक छलफल कार्यक्रम सम्पन्न गरेको छ।

माननीय सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्री एकनाथ ढकालज्यूको अध्यक्षतामा सम्पन्न उक्त छलफल कार्यक्रममा मन्त्रालयका सचिव तथा उच्च पदाधिकारीहरू, राष्ट्रिय सहकारी विकास बोर्डका सह-अध्यक्ष, सहकारी विभागका रजिष्ट्रार, राष्ट्रिय सहकारी संघका अध्यक्ष, उपत्यकाका प्रमुख जिल्ला अधिकारीहरू, वाणिज्य तथा आपूर्ति व्यवस्था विभाग, कृषि व्यवशाय प्रबर्द्धन तथा बजार विकास निर्देशनालय, उपत्यकाका डिभिजन सहकारी कार्यालयहरू, कृषि सम्बन्धी विषयगत केन्द्रिय सहकारी संघहरू, राष्ट्रिय सहकारी बैंक, उपत्यकास्थित जिल्ला सहकारी संघहरू एवं विषयगत जिल्ला उपभोक्ता सहकारी संघहरू, दुग्ध विकास संस्थान, कृषि सामग्री कम्पनी लिमिटेड, नेपाल खाद्य संस्थान, नेशनल ट्रेडिङ लिमिटेड, साट ट्रेडिङ कर्पोरेशन, कालिमाटी फलफूल तथा तरकारी थोक बजार विकास समिति, उपभोक्ता सहकारी संस्थाहरू, नेपाल सहकारी पत्रकार समाज, द युनिभर्सल टाइम्स समेतका प्रमुख लगायत प्रतिनिधिहरूको उपस्थिति रहेको थियो।

उक्त छलफल कार्यक्रमको उद्देश्य माथि मन्त्रालयका सचिव श्री केशव प्रसाद भट्टराईले प्रकाश पार्नु भएको थियो भने विभिन्न निकायहरूबाट उपस्थित महानुभावहरूद्वारा तरकारी फलफूल लगायतका दैनिक उपभोगका सामग्रीहरूको सहज र सुपथ आपूर्ति व्यवस्थापन गर्न सरकार, सरोकारवाला निकायहरू र सम्बन्धित सहकारी संघ संस्थाहरूले निभाउनु पर्ने भूमिकाका सम्बन्धमा विभिन्न सुझावहरू प्रस्तुत गरिएको थियो।

कार्यक्रमको समापनमा माननीय सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रीज्यूबाट आगन्तुक सबैलाई धन्यवाद प्रदान गर्दै छलफलका क्रममा प्रस्तुत गरिएका विचार एवं सुझावहरूको कदर गर्ने तथा सो अनुरूप आगामी दिनमा सहकारी क्षेत्रको गुणात्मक सुधारका लागि सरकारले आवश्यक सहयोग गर्ने विश्वास दिलाउनु भयो। साथै मन्त्रीज्यूबाट आपूर्ति व्यवस्थालाई प्रभावकारी बनाउन सहकारी क्षेत्रले खेल्न सक्ने अहम् भूमिकाबारे प्रकाश पाउँदै यस कार्यका लागि कृषि, उपभोक्ता सहकारी संघ संस्थाहरू लगायत अन्य सबै सरोकारवालाहरूलाई सहकार्यका लागि थप सक्रिय बनाउनु पर्ने, आपूर्ति व्यवस्था प्रभावकारी बनाउन कार्यदल गठन गर्ने, उपत्यकामा केन्द्रियस्तरको तरकारी तथा फलफूल बजार निर्माणका लागि सरकारले अन्तर सरकारी निकायहरू र सरोकारवालाहरूबीचको छलफल कार्यलाई निरन्तरता दिने समेत जानकारी गराउनु भयो।

नेपालमा सहकारीको विकास

सहकारी क्षेत्रको विकासको लागि राज्यको तर्फबाट पहिलो संगठनात्मक व्यवस्थाको रूपमा वि.सं. २०१० सालमा योजना तथा विकास मन्त्रालय अन्तर्गत सहकारी विभागको स्थापना गरिएको थियो । वि.सं.२०१३ सालमा सरकारको कार्यकारी आदेशबाट चितवनमा सहकारी संस्थाहरूको स्थापना गरिएको थियो । चितवनमा सहकारी संस्था ल्याउन वि.सं. २०११ सालमा अमेरिकी सरकारको सहयोगमा स्थापित राप्तिदून बहुमुखी विकास आयोजनाको योगदान रहेको हो । २०११ सालको भाद्र महिनामा परेको भिषण वर्षा र बाढीका कारण त्यस क्षेत्रका जनताहरू घरवार तथा कृषि जग्गा विहिन बन्न पुगे । यो आयोजना यसै पृष्ठभूमिमा आएको थियो । त्यतिखेर सहकारी सम्बन्धी कानूनको अभावले गर्दा सरकारले आदेश जारी गरी सहकारी संस्था ल्याउनु पर्ने अवस्था बन्यो । चितवनको शारदानगरमा २०१३ साल चैत्र २० गते स्थापना गरिएको असीमित दायित्व भएको बखान ऋण सहकारी संस्था नै नेपालको कानूनी मान्यता प्राप्त पहिलो सहकारी संस्था बन्न पुग्यो । नेपालको पहिलो पञ्च वर्षीय योजनाले १८ वटा मूल विकासका क्षेत्रहरू तय गरेकोमा त्यसमध्ये एउटा क्षेत्र सहकारी रोज्तुले त्यतिखेरका नीति निर्माताहरूमा सहकारीको विकास गर्नु पर्ने सौँच विकास भइसकेको सहजै अनुमान गर्न सकिन्छ । वि.सं.२०१५ सालमा सहकारी विभाग अन्तर्गतका कर्मचारीहरूलाई ग्राम विकास बलकको प्रशासनिक नियन्त्रण र अनुगमनमा राखी ती कर्मचारीहरू माफत सहकारी प्रबर्द्धन र विस्तारको काम अधि बढाइएको थियो । यसै वर्ष सहकारी विभागलाई खाद्य, कृषि तथा वन मन्त्रालय अन्तर्गत राखियो । वि.सं.२०१६ सालमा जननिर्वाचित सरकारको प्रयासमा सहकारी संस्था ऐन २०१६ आउनु सहकारीको क्षेत्रमा प्रजातान्त्रिक सरकारको उपादेयतालाई प्रष्ट पार्ने ऐतिहासिक घटना बन्यो । तर प्रजातान्त्रिक वातावरण छोटो समयमै समाप्त पारियो । ३० वर्षे लामो पञ्चायत कालखण्डमा सहकारीको विकासलाई राज्य नियन्त्रित र निर्देशित रूपमा अधि बढाइयो ।

पञ्चायतकालखण्डमा सरकारी प्रयासबाट सहकारीको प्रबर्द्धन र विस्तार गर्ने नीति बमोजिम नेपालका आवधिक विकास योजना सँगै सहकारीको विकासका कार्यक्रमहरू तर्जुमा गरी सोही अनुरूप कार्यान्वयन गर्दै लगियो । उदाहरणका लागि पहिलो पञ्च वर्षीय योजनामा ४५ सय कृषि बहुउद्देश्यीय सहकारी स्थापना गर्ने उद्देश्य राखिएको थियो । योजना अवधिमा ३७८ वटा मात्र सहकारी स्थापना हुन सक्यो । वि.सं. २०१९ सालमा काठमाडौँमा सहकारी प्रशिक्षण केन्द्रको स्थापना गरियो । दोश्रो त्रिवर्षीय योजना अवधिमा भूमिसुधार

ऐन ल्याइयो जसले किसानहरूलाई अनिवार्य बचत गर्नु पर्ने व्यवस्था गर्‍यो । भूमिसुधार कार्यक्रमसँग सहकारीको कार्यक्रम पनि आवद्ध गरियो । यो योजना अवधिमा थप ५४२ वटा सहकारी समाजहरू संगठित हुन सक्यो । वि.सं. २०२४ सालमा भूमिसुधार बचत संस्थाको स्थापना भई नियमित बचत र ऋणको कारोवारलाई अधि बढाइयो । सहकारी बैंक ऐन, २०१९ अन्तर्गत २०२० सालमा सहकारी बैंकको स्थापना समेत गरियो । तर वि.सं. २०२४ सालमा यो बैंकलाई कृषि विकास बैंकमा रूपान्तरण गरियो । वि.सं.२०२० सालमै साम्ना प्रकाशन, साभा भण्डार, साम्ना यातायात र साम्ना स्वास्थ्य सेवाको गठन गरियो तर यी सबै संस्थाहरूमा सरकारको प्रत्यक्ष नियन्त्रण रह्यो। तेश्रो पञ्चवर्षीय योजना अवधिमा सहकारी संस्थाहरूको संख्या १४८९ पुग्यो । ७५ जिल्ला मध्ये ५६ जिल्लामा सहकारी संस्थाहरू स्थापना हुन सक्यो । वि.सं. २०२५ सालमा सहकारी विभागका कर्मचारीहरूलाई भूमिसुधार विभागमा राखी सहकारीको प्रशासन चलेकोमा तत्कालै वि.सं. २०२६ सालमै सहकारी विभागको गठन पुनः गरियो । वि.सं. २०२७ सालमा सहकारी क्षेत्रलाई सबल र सक्षम बनाउने उद्देश्यले सहकारी संघ संस्थाहरूको एकीकरण तथा पुनर्गठन गर्न सहकारी सुदृढीकरण कार्यक्रम लागू गरियो । यसै कार्यक्रम अन्तर्गत संघ संस्थाहरूको व्यवस्थापनलाई सबल बनाउने जिम्मा कृषि विकास बैंकलाई दिइयो । पाँचौँ पञ्च वर्षीय योजना अवधिमा साम्ना कार्यक्रम संचालन गरियो । यस योजना अवधिमा ३० वटा जिल्लाका १८२७ वटा गाँउ पञ्चायतमा सुविधा पुऱ्याउने गरी ११६३ वटा साम्ना संस्थाहरू स्थापना गर्ने र यी संस्थाहरूमा ४४ लाख सदस्यता पुऱ्याउने लक्ष्य लिइएको थियो । यस अधिका सहकारी संस्थाहरूलाई समेत साम्नामा परिणत गर्ने र साम्ना संस्थामा पदेन अध्यक्षको रूपमा गाँउ पञ्चायतका प्रधानपञ्च राख्ने व्यवस्था गरियो । भूमिसुधार कार्यक्रम अन्तर्गतको अनिवार्य बचतलाई साम्ना संस्थाको शेयरको रूपमा सार्ने काम भयो । यसो गर्दा सर्वसाधारणको धारणा बुझ्ने काम भएन फलस्वरूप साम्ना संस्थामा जनताको सहभागिता बाध्यकारी महशूस गरियो । तर पनि साम्ना संस्थाहरूको संख्या एकै वर्षमा २ ९३ बाट बृद्धि भई १०५३ र सदस्यता ९३ हजार बाट ८ लाख २ हजार पुग्यो । वि.सं. २०३३ सालमा ग्रामीण विकासका लागि साम्ना कार्यक्रम अन्तर्गत ३० जिल्लाहरूका प्रत्येक गाँउ पञ्चायतमा बहुउद्देश्यीय सहकारी संस्थाहरूको स्थापना

गरियो । २०३५ सालमा सहकारीको व्यवस्थापनको जिम्मा कृषि विकास बैंकबाट फिक्कियो । कृषि विकास बैंकको व्यवस्थापनबाट सहकारी संस्थाहरू फिक्कदा संस्थाहरूमा व्यवस्थापकको जिम्मेवारी वहन गर्न रुची गर्ने कर्मचारीहरू सहकारी तर्फ

रहन गएँ जस्को प्रशासनिक जिम्मेवारी सहकारी विभागमा सारियो । कृषि विकास बैकबाट व्यवस्थापनको जिम्मा सहकारी संस्थाका संचालकहरुमा सारियो । फेरी पनि पूर्व तयारी बिना र क्षमताको विकासनै नगरी संस्थाको व्यवस्थापन सञ्चालक समितिको जिम्मामा ल्याउदा संस्थाहरुको संचालनमा कुनै गति सिर्जना भएन । तर पनि सहकारीको इतिहासमा वि.सं. २०३७ साल विशेष उल्लेखनिय रहन गयो किन भने यसै वर्ष तत्कालिन संबिधानमा संशोधन गरिंदा निर्देशक सिद्धान्त अन्तर्गत सहकारीलाई आर्थिक विकासको मेरुदण्डको रूपमा उल्लेख गरियो । छैठौँ पञ्चवर्षिय योजना अवधि अन्तर्गत वि.सं. २०३८ सालमा तराईको २० वटा जिल्लामा सघन साम्ना कार्यक्रम संचालन गरियो । साम्ना संस्थामा पदेन अध्यक्ष र संचालक हुने व्यवस्था हटाई सदस्यहरुबाट निर्वाचित संचालक समिति गठन गर्ने व्यवस्था गरियो । सातौँ पञ्चवर्षिय योजना अवधिमा १४४ वटा नयाँ संस्थाहरु स्थापना भएँ । योजना अवधिको अन्त्यसम्ममा ७२ वटा जिल्लामा ८३० वटा कृषिमा आधारित साम्ना सहकारी र ५४ वटा गैर कृषि सहकारी संस्थाहरु संचालनमा रहेको पाइएको छ । यतिवेला ३३ वटा जिल्लामा जिल्ला सहकारी संघ समेत गठन भएको देखिन्छ । यसै यो जना अवधिमा संरचनागत समायोजन कार्यक्रम (Structural Adjustment Program) संचालनबाट रसायनिक मल विक्री गर्ने साम्ना संस्थाहरुको एकाधिकार समेत गुम्न पुगी संस्थाहरुको प्रशासनिक खर्च धान्न समेत मुश्किल परेको थियो । वि.सं. २०४१ सालमा साम्ना संस्था ऐन तथा वि.सं. २०४३ सालमा नियमावली जारी भयो । वि.सं. २०४४ सालमा उच्चस्तरीय साम्ना विकास केन्द्रीय समन्वय समितिको गठन गरियो र यसै वर्ष साम्ना विकास विभागलाई भूमिसुधार मन्त्रालयबाट पुनः कृषि मन्त्रालय अन्तर्गत ल्याइयो ।

बहुदलीय व्यवस्थाको पुनर्स्थापना पछि वि.सं. २०४७ सालमा सरकारले राधाकृष्ण मैनालीको अध्यक्षतामा राष्ट्रिय सहकारी महासंघ परामर्श समितिको गठन गर्‍यो । सात सदस्यीय यस समितिमा सुभाष नेम्बाङ्ग, डा.मदन खतिवडा, डा.चैतन्य मिश्र, मुकुन्दराज सत्याल, कुलचन्द्र अधिकारी र भोगेन्द्र चौधरी सदस्य रहनु भएको थियो । सोही वर्षको कात्तिक ३० गते यस समितिले आफ्नो प्रतिवेदन सरकार समक्ष प्रस्तुत गर्‍यो जसले सहकारी क्षेत्रलाई राज्यको नियन्त्रण भन्दा बाहिर राख्नु पर्ने गरी दिएका सुझावहरु सहकारीका अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा स्वीकार गरिएको स्वायत्तता र स्वतन्त्रताको सिद्धान्त अनुकूल थियो । वि.सं. २०४९ सालमा कार्यान्वयनमा आएको सहकारी ऐन, २०४८ ले सहकारी संस्थाहरु स्वतःस्फूर्त आउने वातावरण त तयार भयो तर सहकारी संस्थाहरुको सहकारी सिद्धान्त तथा मूल्यहरुको पालना गराउने विषयमा भने कार्यान्वयनमा आएको ऐन र संरचनागत व्यवस्थाहरु प्रभावकारी हुने व्यवस्थाहरुको काम र हन गयो । फलस्वरूप निजी फाइदाका लागि पनि सहकारी संस्थाहरु स्थापना गर्ने होड चल्यो जसले गर्दा समग्र सहकारी क्षेत्रको विकासमा नकारात्मक अवस्था कायम नै रह्यो । वि.सं.

२०४९ सालमा सहकारी संस्थाहरुको सबैभन्दा माथिल्लो संगठन राष्ट्रिय सहकारी संघ र केन्द्रीय विषयगत संघको रूपमा नेपाल बचत तथा ऋण केन्द्रीय सहकारी संघ एवं केन्द्रीय दुग्ध उत्पादक सहकारी संघको गठन भयो । राष्ट्रिय सहकारी संघले वि.सं. २०५४ सालमा अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी महासंघको सदस्यता समेत प्राप्त गर्‍यो । वि.सं. २०५७ सालमा कृषि मन्त्रालयको नाम परिवर्तन भई कृषि तथा सहकारी मन्त्रालय कायम गरियो । यही वर्ष सहकारी ऐन २०४८ को दफा २६ संशोधन गरी नेपालमा राष्ट्रिय सहकारी बैक स्थापना गर्ने व्यवस्था भयो फलस्वरूप २०६१ साल देखि सहकारी बैक संचालनमा आउन सकेको छ । वि.सं. २०५७ सालसम्म सहकारी संघ संस्थाहरुको आयमा कुनै कर नलाग्ने व्यवस्था भएको मा २०५८ साल देखि नगरपालिका भित्रका सहकारीहरुलाई आयकरको दायरामा ल्याइयो यसबाट सहकारी संस्थाहरुले गैर नाफामूलक भूमिकाहरु निर्वाह गर्न कठिनाई महशूस गरे को गुनासो सहकारी कर्महरुबाट निरन्तर रूपमा आइने रहेको छ । भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५८ को दफा १४ ले कर्मचारीहरुलाई सहकारीको सदस्य बन्नबाट बञ्चित गरे को व्यवस्थाको सहकारी क्षेत्रबाट आलोचना भइने रहेको छ । कर्मचारीहरुको मात्र सहभागितामा स्थापना भएका सहकारीहरुमा कर्मचारीको संलग्नतालाई यस प्राबधानले सधैँ नकारात्मक प्रभाव पार्ने काम गरेको छ । सहकारी संघ संस्थाहरुको विकास र प्रबर्द्धन प्रतिकूल हुने गरी सहकारी विभाग अन्तर्गतका ३० वटा कार्यालयहरुको खारेजी तथा ६ सय कर्मचारी कटौती गर्ने २०६१ सालको निर्णय आफैमा आलोचनायुक्त रहेको छ । वि.सं. २०६३ को चैत्र सम्ममा सहकारी संस्थाहरुको संख्या ९७२० रहेकोमा वि.सं. २०६९ साल आश्विन महिनाको अन्त्यमा सहकारी संस्थाहरुको संख्या २६५०१ पुगेको छ भने सदस्यता ४६ लाख नाघेको छ । सहकारी क्षेत्रको कारोवार समेत १.७ खर्व पुगेको छ । सहकारी संस्थाहरुमा महिला सहभागिता चालिस प्रतिशत नाघेको छ । करिव २६ सय सहकारी संस्थाहरुमा महिलाहरुको मात्र सहभागिता रहेको छ । यसबाट महिलाहरुको सशक्तिकरणमा सहकारीले योगदान पुऱ्याउन सकेको व्यवहारमै पुष्टी भएको छ । नेपालको अन्तरिम संबिधान, २०६३ को धारा ३५ (२) ले नेपालको अर्थतन्त्रको विकासमा सरकार, सहकारी र निजी क्षेत्रको परिचालनलाई आधार बनाउने व्यवस्था गरेको छ । अन्तरिम तिन वर्षे आवधिक योजनाले सहकारी क्षेत्रको विकासका लागि छुट्टै अध्यायको व्यवस्था गरी समग्र सहकारी क्षेत्रलाई प्राथमिकता दिएको प्रष्ट भएको छ ।

विश्वमा सहकारी अर्थव्यवस्थाको प्रयोग

विश्व समुदायले आर्थिक विकासका लागि अवलम्बन गरे का अर्थव्यवस्था अन्तर्गत राज्यले नेतृत्व गरेको अर्थव्यवस्था (State-led economy), निजी क्षेत्रको बाहुल्य रहने बजार अर्थव्यवस्था (Market economy) र सामाजिक अर्थव्यवस्था

(Social economy) गरी तीन किसिमका विधिहरू पर्दछन् । हाल केही मुलुकहरू वाहेक विश्वको बहुसंख्यक मुलुकहरूमा एउटा मात्र नभई आर्थिक विकासका मिश्रित विधिहरू प्रयोगमा आईरहेको पाइन्छ । सहकारी सामाजिक अर्थव्यवस्थाको एउटा महत्वपूर्ण विधि हो । प्रजातन्त्रको अभ्यास, देशको आर्थिक तथा सामाजिक विकास, वातावरण संरक्षण, ग्रामीण तहमा समेत दीगो र उत्पादक रोजगारीको सिर्जना, सामाजिक एकीकरण जस्ता क्षेत्रमा सहकारीले पुऱ्याउने यो गदानका आधारमा पनि यसको भूमिका निजी क्षेत्र र सार्वजनिक क्षेत्रको भन्दा फरक हुने भएकोले सहकारीलाई आर्थिक व्यवस्था अन्तर्गत तेश्रो क्षेत्रको रूपमा परिभाषित गरिएको हो । समान उद्देश्यहरूको प्राप्ति तथा सामूहिक आवश्यकताहरू पूर्ति गर्न स्व-इच्छाले समुदायका व्यक्तिहरू मिलेर सामूहिक स्वामित्व तथा प्रजातान्त्रिक नियन्त्रणमा आधारित रही सञ्चालन गरिने व्यावसायिक संगठनहरू सहकारी हुन् । स्वामित्व र उपयोग गर्ने एउटै समुदाय हुनु र निर्दिष्ट सिद्धान्त र मूल्यहरूका आधार मा मात्र सहकारी सञ्चालन गर्न सकिने कारणले गर्दा यस क्षेत्रलाई गैर नाफामूलक व्यवसायको रूपमा विश्व समुदायले स्वीकार गरेको छ ।

सहकारी अर्थव्यवस्थाको उपयुक्त ढंगले प्रबर्द्धन गर्दै लगियो भने राज्यको बजेटमा समेत सामाजिक विकासमा गरिने खर्चको बोझ कम हुँदै जाने साथै गरिने खर्चको पनि सार्थक उपयोग हुने अवस्थाको सिर्जना हुन पुग्दछ । सहकारीहरूले सामाजिक सुरक्षाका कार्यक्रमहरू मार्फत राज्यको काममा सघाई रहेका हुन्छन् । सरकार स्वयंले लगानी गर्नुपर्ने स्वास्थ्य, शिक्षा र सुरक्षाका क्षेत्रमा समुदायको लगानी आकर्षित गर्न र सेवा प्रवाहलाई प्रभावकारी बनाउन पनि सहकारी माध्यम प्रभावकारी बनेको पाइन्छ । यस्तो विशिष्ट प्रकृतिका व्यावसायिक विधिलाई राज्य स्वयंले प्रबर्द्धन गर्नका लागि उपयुक्त नीति र कार्यक्रम बनाउने दायित्व निर्वाह गर्नुपर्ने हुन्छ । सहकारीको अभ्युदय नै विपन्न समुदायहरूले आफूहरूलाई सामा आवश्यकता र आकांक्षाहरूको परिपूर्ति गर्न र आर्थिक तथा सामाजिक शोषणको चंगुलबाट जोगाउन खडा गरिएको संगठनबाट भएको हो । विशेषतः सहकारीले पूर्ण प्रजातन्त्रको अभ्यासलाई आधारशिला बनाएको हुन्छ भने प्रतिफल वर्ग संघर्ष विनाको शोषण रहित सामाजिक-आर्थिक अवस्थाको सिर्जनामा गएर देखा पर्दछ । आर्थिक प्रजातन्त्रको उत्तम प्रयोगनै सहकारी अर्थव्यवस्था हो । त्यसैले पनि सहकारी विधिको अर्थव्यवस्था बहुसंख्यक मुलुकहरूमा अवलम्बन गरिएको पाइएको छ । सबै खाले राजनीतिक दर्शनमा सहकारीको प्रयोगको खोजी निरन्तर भइरहेको हामी पाउँदछौ । खुला बजारका अवगुणहरूलाई न्यून गर्न पनि सहकारी पद्धतिका व्यवसायहरूको विकास आवश्यक छ भन्ने यथार्थलाई हालैको विश्व आर्थिक मन्दीले पुष्टी गरेको छ ।

अहिले विश्वका १ अर्ब मानिसहरू सहकारीको सदस्य

रहेको पाइएको छ । सहकारी क्षेत्रले १० करोड मानिसहरूलाई प्रत्यक्ष रोजगारीको अवसर सिर्जना गरेको छ । युरोपमा मात्रै अहिले १ लाख ६० हजार सहकारी संस्थाहरू रहेका छन् जसमा १२ करोड ३० लाख सदस्यहरू आबद्ध छन् भने ५४ लाख मानिसहरूले रोजगारी पाएका छन् । संयुक्त राष्ट्र संघले सहकारीलाई देशको आर्थिक तथा सामाजिक विकासमा यो गदान पुऱ्याउने प्रभावकारी माध्यमको रूपमा धेरै अधि देखि स्वीकार गर्दै आएको छ । संयुक्त राष्ट्र संघले विशेष गरी उपभोक्ता सहकारी, खरिद सहकारी, उत्पादन सहकारी र श्रमिक सहकारीको विकासलाई उच्च महत्व दिएको पाइन्छ । सन् २०१२ लाई अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी वर्षको रूपमा घोषणा गरेर संयुक्त राष्ट्र संघले सहकारी अर्थव्यवस्थाको विकास गरेर गरिवी निवारण, उत्पादक पूर्ण रोजगारीको सिर्जना, सामाजिक एकीकरण मार्फत सामाजिक पूँजीको निर्माण गर्न र वातावरण संरक्षणको क्षेत्रमा योगदान पुऱ्याउन विश्व समुदायलाई दृढ सन्देश दिएको

छ । सहकारी अभियानको थालनी सर्वप्रथम १९ औं शताब्दीमा युरोपबाट भएको हो । युरोपको पनि बेलायत र फ्रान्सबाट सहकारीको अभ्यास शुरु गरिएको थियो । उपभोक्ता सहकारीको स्थापनाको लागि बेलायत, वित्तीय सहकारीको स्थापनाका लागि जर्मनी र श्रमिक सहकारीको स्थापनाका लागि फ्रान्सले ऐतिहासिक अग्रता हासिल गरेका छन् । सहकारीको स्थापनामा १८ औं र १९ औं शताब्दीको औद्योगिक क्रान्तिको महत्वपूर्ण भूमिका रहेको छ । औद्योगिक क्रान्तिले तत्कालीन विश्वको सामाजिक-आर्थिक अवस्था र संस्कृतिमा ठूलो परिवर्तन ल्यायो । खाशगरी मजदूरहरूको जीवनयापनलाई कठिन बनाई दियो । यसको असर बेलायतबाट शुरु भई युरोपका अन्य मुलुकहरू र केही समय पछि अमेरिका र विश्वका धेरै मुलुकहरूमा पर्न गयो ।

सन् १८८५ मा स्थापना भएको अन्तर्राष्ट्रिय सहकारी महासंघ (International Co-operative Alliance) ले सहकारीका सिद्धान्तहरूमा सन् १९३७, १९६६ र १९९५ मा गरी ३ पटक पुनरावलोकन गरेको छ । यस अधि सन् १८४४ मा रोचडेली सिद्धान्तहरू प्रचलनमा रहेका थिएँ । अमेरिकाको म्यानचेस्टरमा सन् १९९५ मा शताब्दी समारोह पारेर आई.सि.ए को साधारण सभाले सहकारीको परिभाषा, मूल्य र सिद्धान्तहरू समेटेर सहकारीको परिचय सम्बन्धी विवरण जारी गरेको हो । यसरी विश्व सहकारी अभियानको नेतृत्व आ.सि.ए.ले लिएको छ ।

सहकारीका मूल्यहरू

सहकारीका मूल्यहरूलाई ६ वटा आधार मूल्यहरू र ४ वटा नैतिक मूल्यहरू गरी दुई भागमा विभक्त गरिएको छ । आधार मूल्यहरू (Base Values) देहाय बमोजिम रहेका छन् :

- ◆ स्व-सहयोग :सहकारी अरुको भरमा नभै आफ्नै बलमा दिगो रुपमा विकसित हुने संगठन हो ।
- ◆ स्व-उत्तरदायी :सहकारीको राम्रो नराम्रो पक्षको उत्तर दायीत्व स्वयं सदस्यहरूले वहन गर्नु पर्दछ ।
- ◆ प्रजातन्त्र :सहकारी आर्थिक प्रजातन्त्रको माध्यम हो । सदस्यहरू एक सदस्य एक मतका आधारमा सहकारीको व्यवस्थापनमा पूर्णत निगरानी र नियन्त्रण राख्दछन ।
- ◆ समानता :सदस्यहरू वीच समानताको व्यवहार सहकारीको आदर्श हो ।
- ◆ समता :समुदाय भित्रका अशक्त, गरिव र पछाडि परेका सदस्यहरूलाई विशेष व्यवस्थाहरू गरेर मर्यादित जीवन स्तरमा ल्याउने सहकारीको अभिष्ट हो ।
- ◆ ऐक्यबद्धता :सांस्कृतिक मर्यादाका साथै विभेद रहित ढंगले एकका लागि सबै र सबैका लागि एक भन्ने संस्कृतिको निर्माण सहकारीको लक्ष्य हो ।

सहकारीका नैतिक मूल्यहरू (Ethical Values):

- ◆ इमान्दारिता
- ◆ खुलापन
- ◆ सामाजिक उत्तरदायित्व
- ◆ अरुको हेरविचार

सहकारीका सिद्धान्तहरू

- ◆ स्वेच्छक तथा खुला सदस्यता
- ◆ सदस्यको प्रजातान्त्रिक नियन्त्रण
- ◆ सदस्यको आर्थिक सहभागिता
- ◆ स्वायत्त र स्वतन्त्र
- ◆ शिक्षा, तालिम र सूचना
- ◆ सहकारीहरू वीच सहकार्य
- ◆ समुदाय प्रति चासो

सहकारीका प्रमुख विशेषताहरू

- ◆ सहकारी व्यक्तिहरूको संगठन हो ।
- ◆ सहकारी समुदायका मानिसहरूले आफ्नो स्वेच्छाले साम्ना आवश्यकता र आकांक्षाहरू पुरा गर्न खडा गरिएको स्वेच्छक संगठन हो ।
- ◆ सहकारी प्रचलित कानून बमोजिम स्थापना भएको र आफै ले निर्माण गरेको विधान बमोजिम सञ्चाला हुने छुट्टै कानूनी संरचना भएको स्वायत्त र स्वतन्त्र संगठन हो ।
- ◆ सहकारी सदस्य समुदायको हितमा केन्द्रित गैर नाफामूलक संगठन हो ।

- ◆ सहकारी स्वच्छ उत्पादन र शुद्ध व्यापारमा आधारित सदस्य केन्द्रित व्यावसायिक संगठन हो ।
- ◆ सहकारीहरूको व्यवस्थापनमा प्रजातान्त्रिक पद्धतिको अवलम्बन गर्दै व्यावसायिकताको विकास गरिन्छ ।
- ◆ सहकारीको व्यवस्थापनमा सरकारको संलग्नता र हस्तक्षेपलाई स्वीकार नगरिने ढंगले स्वायत्तताको गुणलाई अक्षुण्ण राख्न स्वनिर्णयको प्रक्रियालाई मजबूत बनाउने प्रयास गरिन्छ ।
- ◆ सहकारीमा पूँजी हैन सदस्यको रुपमा व्यक्ति प्रधान हुनु पर्दछ । कुनै पनि स्वरुपमा सदस्यहरूको शोषणको कल्पना सहकारीमा गर्न मिल्दैन ।

सहकारीका सबल पक्षहरू

- ◆ गरिबी निवारणमा योगदान
- ◆ उत्पादक पूर्ण रोजगारीको सिर्जना
- ◆ श्रमिक सहकारी र सहकारी उद्योग व्यवसायहरू मार्फत मर्यादित श्रमको सुनिश्चितता र श्रम बजारमा सन्तुलन कायम
- ◆ आवश्यकता अनुसारको सेवामुखि व्यवसाय मार्फत प्रकृतिको अत्यधिक दोहनको अन्त्य
- ◆ समावेशी सामाजिक तथा आर्थिक विकासको माध्यमबाट सामाजिक एकीकरणको लक्ष्य उन्मुख
- ◆ सहकारीमा एक सदस्य एक मतको अभ्यास मार्फत समग्रमा प्रजातान्त्रिक पद्धतिको प्रवर्द्धन
- ◆ शुद्ध व्यापार र स्वच्छ उत्पादन मार्फत वातावरणको संरक्षण
- ◆ स्वच्छ उत्पादन मार्फत उपभोक्ताहरूको स्वस्थ जीवनमा टेवा
- ◆ उचित मूल्य र परिमाण एवं गुणस्तरिय बस्तुको आपूर्ति मार्फत समग्र व्यापारमा शुद्धता कायम
- ◆ ज्ञान र सिपमा आधारित उद्यमशिलताको विकासमा सबै युवाहरूको अवसरमा अभिवृद्धि
- ◆ समग्रमा राष्ट्रिय उत्पादनमा वृद्धि
- ◆ सक्रिय र सचेत नागरिकहरूको सहकारी संगठन मार्फत सामाजिक विकृतिहरूको उन्मूलन
- ◆ नाफाको लोभमा बढी जोखिम लिने बजार अर्थव्यवस्थाको जोखिम न्यूनिकरण गरी निस्थिर र दीगो आर्थिक विकास वातावरणको निर्माण
- ◆ संकटको सामना गर्नसक्ने क्षमता

सहकारीका कमजोर पक्षहरु

- ◆ सहकारीको सम्पत्ति माथि साम्ना सम्पत्ति वा सितै हक स्थापित हुने अवस्था
- ◆ सहकारी प्रति राजनैतिक विचारधारामा द्वन्दात्मक अवस्थाका कारण सहकारी अभियानको सक्षमतामा सहकारीको विकास निर्भर रहने अवस्था
- ◆ व्यवस्थापन र सदस्यहरु वीचको निहित स्वार्थको द्वन्दका कारण सहकारीको कमजोर व्यवस्थापन
- ◆ सदस्यहरुको निस्क्रियताका कारण सहकारीको व्यवस्थापन र प्रतिफलमा केहि टाठा बाठाहरुको हालिमुहाली भडर हने अवस्था
- ◆ निजी र सहकारी विचको द्वन्दका कारण सहकारीको विकासमा सरकार र निजी क्षेत्रको असहयोगको सम्भावना
- ◆ सहकारीको परनिर्भर स्वभावका कारण सरकारी वा वाह्य निकायहरुको हस्तक्षेपको सम्भावना
- ◆ राजनीतिक हस्तक्षेपका कारण सहकारीको सांगठिन विकासमा बाधाको सिर्जना

सहकारीको संरचना

प्रशासनिक संगठन संरचना

सहकारीको प्रशासनिक संगठन संरचनालाई यसको प्रजातान्त्रिक प्रक्रियाले प्रभाव पारेको हुन्छ । प्रजातान्त्रिक अभ्यास र व्यावसायिकताको प्रबर्द्धन एकसाथ गर्नु पर्ने भएकोले सहकारीको व्यवस्थापन अन्य पद्धतिको उद्योग व्यवसायको भन्दा फरक र जटिल पनि हुन्छ । सहकारीमा सदस्यको लगानीको आधारमा नभै व्यक्तिगत आधारमा एक सदस्य एक मतको अधिकार रहेको हुन्छ । यसका आधारमा हामीले के बुझ्न जरुरी छ भने सहकारीको महत्वपूर्ण निर्णयहरुमा प्रत्येक सदस्यको मतले अहंम भूमिका निर्वाह गर्दछ । सामान्यतया प्रत्येक देशमा सहकारीको लागि विशिष्ट र छुट्टै ऐन नियमको व्यवस्था गरिएको हुन्छ । सहकारी सम्बन्धी कानूनहरु सामान्यतया राज्यले सहकारीका सिद्धान्त र मूल्यहरुमा प्रतिकूलता नपार्ने गरी तर्जुमा गरी जारी गरिएको हुन्छ । राज्य सञ्चालनमा प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाहरु कटौती भएको अवस्थामा सहकारीको व्यवस्थापनमा समेत राज्यले हस्तक्षेपकारी प्राबधानहरु उपयोग गरेको हुन सक्दछ । अन्यथा सहकारीलाई स्वनियमन र स्वनियन्त्रणमा चलन दिन राज्यले सहकारी र नियमनकारी भूमिका मात्र निर्वाह गरेको हुन्छ । प्रत्येक सहकारीका संगठनहरुले सम्बन्धित देशको सहकारी सम्बन्धी प्रचलित कानूनी व्यवस्था अन्तर्गत रही तथा सहकारीका सिद्धान्त, मूल्यहरु तथा सहकारी क्षेत्रका राम्रा अभ्यासहरुलाई आधार बनाई आफ्नो संगठन सञ्चालन गर्न स्वयं आन्तरिक नियमहरु निर्माण

गर्दछन । यस्ता नियममा समेत सदस्यहरुको प्रजातान्त्रिक अधिकारलाई बलियो र चुस्त गराउने प्राबधानहरु राखिएको हुन्छ । सहकारीले बनाएको यस्तो नियमलाई नेपालमा विनियम भन्ने गरिएको छ । यस्तो विनियममा खाशगरी महत्वपूर्ण व्यवस्थाहरु गरिएको हुन्छ । जस्तै नाम, ठेगाना, उद्देश्यहरु, कूल पूँजी, शेयरको मूल्य र एउटा सदस्यले अनिवार्य रुपमा लिनु पर्ने न्यूनतम शेयरको संख्या, सदस्यहरुको दायित्व, सदस्यहरु थप्ने र घटाउने आधार र विधिहरु, सहकारी व्यवस्थापनका लागि निर्माण गरिने सञ्चालक समिति, लेखा समिति तथा अन्य समिति तथा उप समितिको व्यवस्था तथा पदाधिकारीहरुको काम, कर्तव्य तथा अधिकारहरुका बारे मा स्पष्ट व्यवस्था राखिएको हुनु पर्दछ । सदस्य, सञ्चालक, सुपरिवेक्षण समिति तथा व्यवस्थापन वीचको सम्बन्धलाई प्रष्ट रुपमा व्याख्या गर्न सकिने व्यवस्थाहरु विनियममा भयो भने विवादहरुलाई सहजै व्यवस्थापन गर्न सकिन्छ । सहकारीको प्रशासनिक संरचनालाई देहाय बमोजिम वर्गिकरण गरी अधिकार र कर्तव्य तथा जिम्मेवारीको बाँडफाँड गरिएको हुन्छ :

साधारण सभा वा बैठक (The General Meeting or Assembly):

यो सहकारीको सार्वभौम अधिकार भएको महत्वपूर्ण प्रशासनिक संरचना हो । यसैबाट निश्चृत अधिकारका आधारमा संस्थाको व्यवस्थापन अधि बढ्दछ । अन्तिम निर्णय गर्ने प्राधिकार यसै सँग रहेको हुन्छ । प्रत्यक्ष प्रजातान्त्रिक अभ्यास गर्ने सहकारीको महत्वपूर्ण थलो यस बैठकलाई मानिन्छ । सहकारीका सबै सदस्यहरुको उपस्थिति रहने यो बैठकमा सबै सदस्यहरुले बराबरीको अधिकार प्रयोग गर्दछन । एक सदस्य एक मतका आधारमा महत्वपूर्ण निर्णयहरु गर्ने सदस्यहरु सहभागि रहने यस्तो सभा कम्तिमा वर्षको एक पटक राख्नै पर्ने अभ्यास विश्वभरीका सहकारीले अवलम्बन गरेका हुन्छन । हाम्रो देशको प्रचलित सहकारी कानूनले आर्थिक वर्ष समाप्त भएको मितिले ६ महिना भित्र साधारण सभा बोलाउने पर्ने बाध्यात्मक व्यवस्था गरेको छ । तोकिएको समय भित्र साधारण सभा नबोलाएमा सदस्यहरुको गुनासोको आधारमा वा कार्यालयलाई जानकारी भएको आधारमा स्वयं रजिष्ट्रारले नै साधारण सभा बोलाउने सम्मको अधिकार कानूनले व्यवस्था गरेको छ । यस सभा वा बैठकले प्रमुख रुपमा देहायका कामहरु गर्ने पर्ने हुन्छ :-

- ◆ सहकारीको नीति बनाउने र संशोधन गर्ने काम यस बैठकबाट गरिनु पर्दछ । विशेष गरी सहकारीको विनियम स्वीकृत गर्ने र संशोधन गर्ने काम साधारण सभाबाट मात्र सम्भव हुन्छ । यस कार्यका लागि देशको प्रचलित सहकारी सम्बन्धी कानून र सम्बन्धित सहकारीको विनियमले निर्दिष्ट गरेका विधि र प्रक्रियाहरुको अवलम्बन गरिनु पर्दछ । उदाहरणका लागि विनियम संशोधनका लागि कम्तिमा ५१ प्रतिशत सदस्यहरुको

उपस्थिति र उपस्थित सदस्यहरू मध्ये दुई तिहाई सदस्यहरूको मत आवश्यक हुन्छ ।

- ◆ यसै बैठकबाट सञ्चालक समिति र सुपरिवेक्षण समितिका पदाधिकारीहरूको निर्वाचन गरिन्छ । साधारण सभाबाट यी दुवै समितिका कुनै वा सबै पदाधिकारीहरूलाई हटाउने सर्वोच्च अधिकार पनि यसै सभालाई रहेको हुन्छ । सञ्चालक समिति र सुपरिवेक्षण समितिमा पदाधिकारी नियुक्त गर्ने र हटाउने अधिकार सञ्चालक समितिलाई हुदैन । सामान्यतया समितिका पदाधिकारीहरूलाई हटाउने वा निर्वाचित गर्न विनियममा तो किएको प्रक्रियाहरू पुरा गरी बसेको साधारण सभाको गणपुरक संख्या ९तगयचग० पुगेको बैठकमा उपस्थित सदस्यहरूको बहुमतले निर्णय गरे बमोजिम हुन्छ ।
- ◆ बैठक वा साधारण सभामा पेश गरिएको सहकारीको वार्षिक प्रतिवेदन र लेखा परिक्षणको प्रतिवेदन स्वीकृत गर्ने वा अस्वीकृत गर्ने अधिकार सदस्यहरूमा अन्तर्निहित रहेको हुन्छ ।
- ◆ कारोवार बचतबाट अनिवार्य रूपमा छुट्याउनु पर्ने जगोडा कोष बाहेक बाँकी रहेको रकमलाई विभिन्न कोषमा राख्ने र डिभिडेण्ड तथा उपभोगका आधार मा लाभांश वितरण गर्ने अधिकार यसै बैठकमा रहेको हुन्छ ।
- ◆ नयाँ सदस्यहरूको प्रवेश तथा भएका सदस्यहरूको वर्हिर्गमन सम्बन्धी अन्तिम निर्णय गर्ने अधिकार समेत यसै सभामा अन्तर्निहित रहन्छ ।
- ◆ सहकारीको विघटन, विभाजन वा एकिकरण सम्बन्धी निर्णय समेत यसै सभाले गर्दछ ।

विशेष साधारण सभा (The Extraordinary General Meeting):

प्रचलित सहकारी सम्बन्धी कानून तथा विनियममा भएको व्यवस्था बमोजिम विशेष परिस्थितिमा बोलाइने साधारण सभालाई विशेष साधारण सभा भनिन्छ । यस्तो बैठक बोलाउने आधार भनेको सञ्चालक समितिले तत्काल निर्णय लिनु पर्ने साधारण सभाको कार्यक्षेत्र भित्रको काम गर्न गराउनु, सदस्यहरूलाई साधारण सभा बोलाई तत्काल केही महत्वपूर्ण निर्णय लिनु पर्ने आवश्यकता महशूस भएमा वा सुपरिवेक्षण समितिले साधारण सभाको बैठकको आवश्यकता महशूस गरेको अवस्थामा विशेष साधारण सभाको बैठक बोलाउने काम सञ्चालक समितिले गर्ने पर्ने अवस्था हुन्छ । यस बाहेक नियमनकारी निकायले पनि विशेष परिस्थितिमा सभा बोलाई सम्बन्धित सहकारीको समस्या निराकरण गर्न सक्ने कानूनी अधिकारहरू दिने अभ्यास प्रचलनमा रहेको छ । हाम्रो देशका प्रचलित सहकारी सम्बन्धी कानूनमा लेखापरिक्षकले सञ्चालक

समितिलाई विशेष साधारण सभा बोलाउन दिएको लिखित सुभावाका आधारमा पनि यस्तो बैठक बोलाउनु पर्ने प्रावधान रहेको छ । यस्तो बैठक कहिलेकाही आकस्मिक रूपमा बोलाइने भएकोले सूचनाको म्याद र गणपुरक संख्याका वारेमा सामान्यतया लचिलो व्यवस्था गरिएको हुन्छ ।

सञ्चालक समिति (The Board of Directors):

सहकारीको व्यवस्थापनका लागि सदस्यहरूले आफूहरू मध्येबाट केही सदस्यहरूलाई एक निश्चित अवधिका लागि जिम्मेवारी सहित निर्वाचित गरी अधिकार प्रत्यायोजन गरिएको हुन्छ । सञ्चालक समितिको आकार र संरचनाका वारेमा प्रचलित कानून र सहकारीको स्वीकृत विनियमले निर्धारण गरे बमोजिम हुन्छ । सामान्यतया कम्तिमा ५ जना देखि बढीमा १५ जना सम्मको सञ्चालक समितिको प्रचलन विश्वमा अवलम्बन गरिएको पाइन्छ । सदस्यको संख्या र सहकारीको भौगोलिक कार्यक्षेत्रका आधारमा सञ्चालक समितिको आकार तय गरिनु उपयुक्त हुन्छ । सञ्चालक समितिका पदाधिकारीहरूको कामलाई विभाजन गर्ने गरी पदनाम सहित वा अध्यक्ष बाहेक अन्य पदहरूलाई समानता कायम गर्ने गरी पनि सञ्चालक समिति गठन गर्ने प्रचलन रहेको छ । पदनाम तोकेर निर्वाचन गर्ने प्रचलन सानो कारोवार भएको सहकारीका लागि उपयोगी भएको पाइएको छ भने कारोवारको आकार बृद्धि भई संस्थान संस्कृतिमा व्यवस्थापन लैजानु पर्ने अवस्थामा एक जना अध्यक्ष र अरु सञ्चालकहरूको समान हैसियत हुने व्यवस्था गरिनु उपयुक्त हुन्छ । सञ्चालकहरू मध्ये एक जनालाई प्रबन्ध सञ्चालकको जिम्मा दिने प्रचलन पनि रहेको छ । सञ्चालक समितिलाई साधारण सभाका निर्दिष्ट अधिकार क्षेत्र बाहेकका काम गर्ने अधिकार रहन्छ । सामान्यतया सञ्चालक समितिले देहायका कामहरू सम्पादन गर्नु पर्दछ :-

- ◆ सहकारीको दिशा निर्धारण गर्ने,
- ◆ संगठनको रणनीतिक उद्देश्यहरू छनौट गर्ने,
- ◆ संगठनका व्यवस्थापक तथा कर्मचारीहरूको पारिश्रमिक र अन्य सुविधा सम्बन्धी नीतिहरू तय गर्ने,
- ◆ मानव संशाधन व्यवस्थापन सम्बन्धी नीतिहरू तय गर्ने,
- ◆ व्यवस्थापकको नियुक्ति र पारिश्रमिक तथा सुविधाहरू तोक्ने,
- ◆ संगठनको सम्पत्तिको संरक्षण, सम्बर्द्धन तथा उपयोग गर्ने गराउने,
- ◆ संगठनले प्रवाह गर्ने सेवा तथा उत्पादनलाई प्रभावकारी बनाउने,
- ◆ व्यवस्थापन तथा कर्मचारीहरूबाट भए गरिएका कामहरूको अनुगमन गर्ने,
- ◆ वार्षिक बजेट तथा कार्यक्रमहरू पारित गर्ने,

- ◆ संगठनका कार्यहरूको प्रभावकारिताका लागि आवश्यक पर्ने नीति तथा प्रक्रियाहरू निर्धारण गर्ने,
- ◆ साधारण सभाका निर्णयहरू कार्यान्वयन गर्ने,
- ◆ राज्यका प्रचलित कानूनहरू, निर्देशनहरू र सहकारीका सिद्धान्त तथा मूल्यहरूको अनुसरण गर्नु गराउनु,
- ◆ संगठनको आय व्ययको अभिलेख व्यवस्थित गर्नु र लेखापरिक्षण गराउनु,
- ◆ सञ्चालक समितिको बैठकको नियमनितता कायम गर्नु,
- ◆ सुपरिवेक्षण समितिको भूमिकालाई प्रभावकारी बनाउन सहयोग गर्नु,
- ◆ सदस्यहरूलाई संगठनको गतिविधिका वारेमा सूचना सम्प्रेषण हुने भरपर्दो व्यवस्था मिलाउनु,
- ◆ समयमै वार्षिक साधारण सभा बोलाउनु,
- ◆ सञ्चालक समितिको पदावधि सकिनु अगावै नयाँ निर्वाचनको व्यवस्थापन गर्नु ।

सुपरिवेक्षण वा लेखा समिति

(Supervisory or Account Committee):

साधारण सभाले सञ्चालक समितिको साथै संगठनको गतिविधिमाथि वेला वेलामा अनुगमन गरी गलतिहरू समयमै सच्याउन र भविष्यमा गलति कमजोरीहरू दोहरिन नदिने व्यवस्थाका लागि सुपरिवेक्षण समितिको गठन गरेको हुन्छ। यस्तो समितिमा ३ वा ५ जना निर्वाचन गरिने प्रचलन रहेको छ। नेपालको सहकारी ऐनले लेखा समितिको नामबाट एक जना संयोजक सहित ३ जनाको समिति साधारण सभाले निर्वाचित गर्ने व्यवस्था गरेको छ। ऐन बमोजिम यो समितिले संगठनको आन्तरिक लेखा परिक्षण गराउन र समितिलाई सुझाव दिन सक्ने साथै साधारण सभामा प्रतिवेदन पेश गर्ने जिम्मेवारी तोकेको छ। व्यवहारमा भने यो समितिको भूमिका प्रभावकारी रहेको पाइएको छैन। सहकारी भित्र शक्ति पृथक्करणको सिद्धान्त कार्यान्वयनका लागि सुपरिवेक्षण समितिको गठन गरिएको हो भन्ने कुरा व्यवहारमा चरितार्थ भइरहेको छैन। सञ्चालक समिति व्यवस्थापनका लागि हो भने सुपरिवेक्षण समिति व्यवस्थापनको परिक्षणको लागि हो। दुवै समितिको निर्माणका लागि सदस्यहरूले आफ्नो उत्तिकै महत्वपूर्ण मत दिएर जिम्मेवारी दिएका हुन्छन्। सहकारीका संगठनहरू सिद्धान्त: स्वनियमनमा चलनु पर्ने हुन्छ। स्वनियमनको लागि सहकारी संगठनले अवलम्बन गर्ने विभिन्न विधिहरू मध्ये यो समितिको निर्माण एक महत्वपूर्ण अंग हो। स्वनियमनका लागि स्वनियन्त्रणको अभ्यास आवश्यक हुन्छ र यस्तो आन्तरिक नियन्त्रणका लागि यो समितिको भूमिका प्रभावकारी बनाउनुको कुनै विकल्प छैन।

सहकारीको वित्तीय संरचना

सहकारी समुदायले गर्ने व्यवसाय हो। सहकारीका विश्वव्यापी रूपमा स्वीकार गरिएका सिद्धान्त र मूल्यहरू तथा अन्तर्राष्ट्रिय राम्रा प्रचलनहरूको उपयोग गरेर सहकारीको व्यवस्थापन गरिएको हुन्छ। जसरी निजी व्यवसायको पहिलो प्राथमिकता बढी भन्दा बढी नाफा आर्जन गर्नु हुन्छ भने सहकारी व्यवसायको पहिलो प्राथमिकता सदस्यहरूको सेवा र सामाजिक उत्तरदायित्वको निर्वाह गर्दै केही बचत गरी संस्थागत विकास गर्ने हुन्छ। त्यसैले पनि वित्तीय संरचनामा पनि निजीभन्दा फरक खालको संरचना सहकारीको हुने गर्दछ जसलाई यहाँ उल्लेख गरिएको छ :

शेयर पूँजी (Share Capital): सहकारीमा शेयर रकमलाई त्यति महत्व दिइएको हुँदैन। सन् १९९० को दशक अघि सम्म सहकारी निर्माणमा राज्यले पूँजी निर्माणमा सहयोग गर्ने परिपाटी थियो। सदस्यहरूले गर्ने कारोवार र बचतबाट छुट्टयाइने जगेडा कोषको रकमबाट पूँजी निर्माण गर्ने परिपाटी सहकारीमा व्यापक थियो। तर यतिखेरको अवस्था भने सहकारीले बजार अर्थव्यवस्था बीच निजी क्षेत्रसँग पूर्ण प्रतिस्पर्धा गर्नु पर्ने भएकोले र राज्यले दिने सहयोग पनि आलोचनाको विषय बन्न गएकोले सहकारीको स्थापनाकाल देखिनै सदस्यहरूले उल्लेख्य पूँजी लगानी गर्ने सौँच बनाउनु पर्ने हुन्छ। सहकारीमा सदस्यहरू आउने र छाड्ने प्रक्रियालाई खुला राख्नु पर्ने हुन्छ जसले गर्दा सहकारीको शेयर पूँजी आकलन गर्न वा एकिकन गर्न सकिँदैन। अन्य निजी व्यवसाय जस्तो गरी पूँजीको आधारमा नाफालाई डिभिडेण्डको रूपमा वितरण गर्न सहकारीमा सकिँदैन। नेपालको सहकारी ऐनले पनि यस्तो डिभिडेण्डको सिमा शेयर पूँजीको १५ प्रतिशत निर्धारण गरेको छ। अन्य देशहरूमा समेत सहकारीको डिभिडेण्ड कानूनले निर्धारण गर्ने गरेको छ। सहकारीको पूँजी शेयर धनीले कुनै पनि वेला फिक्न सक्ने भएकोले सहकारीको पूँजीलाई दायित्वको रूपमा गणना गरिनु पर्ने जिकिर अन्तर्राष्ट्रिय लेखामान बोर्ड (International Accounting Standard Board) ले लिइरहेबाट सहकारीको शेयरको प्रकृति स्पष्ट हुन आँउछ। सहकारीको शेयर खुला बजारमा किन बेच हुन नसक्ने हुँदा शेयरको वर्तमान मूल्य पनि आकलन गर्न सकिँदैन।

बचत र जगेडा (Surpluses and Reserves):

सहकारीको मुनाफालाई लाभांश नमानी बचत मानिन्छ। यो बचतबाट अनिवार्य रूपमा जगेडा कोष (Reserve Fund) को व्यवस्था गर्नु पर्ने हुन्छ। यस्तो जगेडा कोषको रकम वर्षेनी बचतको २५ प्रतिशतका दरले छुट्टयाउनु पर्ने व्यवस्था नेपालको सहकारी ऐनले गरेको छ। अन्य केही देशहरूले पनि यसरी नै प्रतिशत तोकेको पाइएको छ। यसरी जगेडा कोष निर्धारण गरेपछि बाँकी रहने रकमबाट डिभिडेण्ड तथा पूँजीमा सिमित व्याज दिन सकिने व्यवस्था अन्यत्र प्रचलनमा रहेको छ।

दान तथा अनुदान (Donations and Grant):

सहकारी गरिवी निवारण र समुदायको सशक्तिकरणसँग पनि जोडिएको विषय हो । यस आधारमा सहकारीलाई सरकारी कोष र दाताहरूले समेत सहयोग दिएका हुन्छन् । यस्तो सहयोग सदस्यहरूले पनि उपलब्ध गराउन सक्दछन् भने स्थानिय निकायहरूले पनि सहकारीको विकासका लागि सहयोग पुऱ्याउँदछन् । दायित्व सिर्जना नहुने भएता पनि यस्तो सहयोग पनि सहकारीको वित्तिय संरचना भित्र गणना गर्ने र अभिलेख राख्ने व्यवस्था गरिएको हुन्छ ।

ऋण (Borrowing): सहकारीहरूले न्यून वित्तको पूर्ति ऋण खोजेर पुरा गर्दछन् । यस्तो ऋण लिंदा सकेसम्म आफ्ना सदस्यहरू भित्रबाट लिने प्रचलन ज्यादै राम्रो मानिन्छ । तर पनि निश्चित सीमासम्म र सहकारीको स्वतन्त्रता र स्वायत्ततामा आँच नपुऱ्याउने गरी ऋण लिई सदस्यहरूको गर्जा टार्ने कुरा उपयुक्त मानिन्छ । यसका लागि सहकारीहरूले सहूलियत दरका कर्जाहरूको सदुपयोग गर्नु पर्दछ ।

सहकारीको तेर्सो तथा ठाँडो संगठन संरचना

सहकारीको सिद्धान्त अनुसार पनि सहकारी सहकारी वीचको सहकार्यका लागि सहकारी वीच तेर्सो र ठाँडो संरचनाहरू बनाउनु पर्ने हुन्छ । दुई वा दुई भन्दा बढी सहकारीहरू मिलेर साभा रूपमा कुनै सम्पत्तिको प्रयोग गर्ने वा संयुक्त रूपमा गर्ने व्यवसायले तेर्सो संरचनाको निर्माण गर्दछ । त्यस्तै ठाँडो संरचना अन्तर्गत सहकारीका संगठनहरूको सदस्यता रहने युनियन, फेडरेशन र कन्फेडरेशन जस्ता सहकारीका संरचनाहरू पर्दछन् । एक अर्का वीचको व्यावसायिक स्वार्थ र विशेषताहरू मिल्ने अवस्थामा कम्तिमा २ वटा सहकारी संस्थाहरू मिलेर युनियनको निर्माण गर्न सक्दछन् । त्यस्तै कम्तिमा २ वटा उही प्रकृतिका युनियनहरू मिलेर फेडरेशन र सबै फेडरेशनहरू मिलेर सहकारीको सबैभन्दा माथिल्लो संगठनको रूपमा कन्फेडरेशनको निर्माण हुन सक्दछ । तर सम्बन्धित देशको कानूनले एउटा निश्चित भूगोलमा एक विषयको एक मात्र युनियन र एकै प्रकृतिका युनियनहरू मिलेर एक मात्र फेडरेशन बनाउने प्रावधान गरेको हुन्छ । कन्फेडरेशनमा भने सबै युनियन र फेडरेशन वा फेडरेशन मात्र सदस्य बनाउने विधि अवलम्बन गर्न सकिन्छ । धेरै तहका संरचनाहरू आर्थिक र व्यवस्थापनका दृष्टिले फलदायी नभएको अभ्यासबाट विषयगत सहकारीलाई दुई तहको संरचना बनाई प्रभावकारी ढंगले सदस्यहरूलाई सेवा दिन सकेको थुप्रै उदाहरणहरू छन् । यस आधारमा युनियनको ठाँउमा सोभै सहकारी संस्थाहरू फेडरेशनमा सदस्यता लिन्छन् र फेडरेशनले आवश्यकताका आधारमा सेवा केन्द्रहरू विस्तार गरी सदस्य संस्थाहरूलाई विकेन्द्रित सेवा प्रदान गर्दछन् ।

सहकारीमा सुशासन

सहकारी संघ संस्थाहरूको व्यवस्थापनमा सुशासनको महत्व सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी क्षेत्रको जस्तै रहेको छ । सहकारीको सिद्धान्त अनुसार पनि सहकारी संस्थाहरू स्वायत्त र स्वतन्त्र ढंगले सञ्चाल र व्यवस्थापन गर्नुपर्ने भएकोले सदस्यहरूको समग्र हितका लागि पनि संस्थाको स्वायत्तता र स्वतन्त्र अस्तित्व कायम राख्न सुशासनका विधिहरूको अवलम्बन अतिनै महत्वपूर्ण हुन आउँछ । सहकारीमा सुशासन भन्नाले सहकारीको उद्देश्य एवं सदस्य र सेवाग्राहीहरूले प्राप्त गरेका सेवा र सुविधा उपर दृष्टि पुऱ्याउनु हो ।

(Good governance in co-operative enterprises means focusing on the organization's purpose and outcomes for members and stakeholders.)

- ◆ **नियमहरूको पालना (Regulatory/Legal Responsibilities):** सहकारी संघ संस्थाहरूले प्रचलित सहकारी सम्बन्धी कानून र कारोवारसँग सम्बन्धित अन्य कानूनहरूको साथ साथै संगठनको विनियम र आवश्यक अन्य नीति निर्देशिकाहरूको समेत पालना गर्नु पर्दछ । यसका लागि संगठनमा एक जना पदाधिकारी वा अधिकृतलाई नियम कार्यान्वयन अधिकृत (Compliance Officer) तोकी भए गरेका काम र समस्याहरूका बारेमा नियमित रूपमा जिम्मेवार पदाधिकारीहरू र सम्बन्धित शाखा उपशाखालाई घचघचाउने काम गर्नुका साथै संचालक समितिमा प्रतिवेदन दिने वा जानकारी गराउने व्यवस्था मिलाउनु पर्दछ ।
- ◆ **आन्तरिक नियन्त्रण र बाह्य परिक्षण (Internal Control and External Verification):** सहकारीमा आन्तरिक नियन्त्रणका लागि एउटा छुट्टै समिति समेतको व्यवस्था गरिएको हुन्छ । यस्तो समितिका पदाधिकारीहरू सदस्यहरूबाट निर्वाचित भई आएका हुन्छन् । समितिका पदाधिकारीहरूलाई सहकारी व्यवस्थापन का आधारभूत ज्ञान र कर्मचारी प्रशासन तथा आर्थिक कारोवारको लेखा राख्ने विशेष ज्ञान दिलाउन संगठनले तालिम प्रशिक्षणको व्यवस्था गर्नु पर्दछ । यस्तो समितिलाई कतै सुपरिवेक्षण समिति भनिन्छ भने कतै लेखा समितिले सम्बोधन गरिएको पाइन्छ । खाशगरी सदस्यहरूका तर्फबाट निष्पक्ष रूपमा संचालक र व्यवस्थापनमा संलग्न कर्मचारीहरूले गरेका क्रियाकलापका बारेमा निगरानी राख्ने र सोको प्रतिवेदन दिने जिम्मेवारी यस समितिले प्राप्त गरेको हुन्छ । यस समितिले संगठन भित्र आन्तरिक नियन्त्रण पद्धति समेत स्थापित गर्नु गराउनु पर्ने हुन्छ । बाह्य परिक्षणको प्रभावकारी माध्यम भनेका अन्तिम लेखा परिक्षणको गुणस्तरले संस्थाको

स्वस्थ जीवनको लागि बाटो प्रशस्त गरिदिन्छ । लेखा परिक्षकको नियुक्ति देखि प्रतिवेदनमा औल्याइएका तथ्यहरूको वारेमा सम्बन्धित पदाधिकारीहरू र सबै सदस्यहरूको चासो संगठनको विकासको मूल आधार बन्ने भएकोले यो विषय स्वस्थ सहकारीको लागि अतिमहत्वपूर्ण क्रियाकलाप भित्र पर्दछ । आन्तरिक नियन्त्रणको पद्धतिले संगठनलाई व्यवस्थित ढंगले संचालन गर्न सहयोग पुऱ्याउदछ भने लेखापरिक्षणको गुणस्तरले व्यवस्थापनका कार्यहरूलाई सदस्यहरू माझ ल्याई गरेका कामहरूका वारेमा प्रष्टाउने काम गर्दछ । यी दुई व्यवस्थाका अतिरिक्त नियामक निकायको निगरानीका लागि अनुगमन र नियमनको लागि सहकारीको सम्बन्धित संघ वा सरकारी निकायको व्यवस्था आवश्यक पर्दछ जसले वेला वेलामा प्रचलित कानून र सहकारीका मापदण्डहरूको पालनाका साथै व्यावसायिक गुणस्तरका वारेमा परिक्षण गर्दछ । नियामक निकायले सहकारीका आन्तरिक नियन्त्रण पद्धतिलाई सवल बनाउने, सहकारीका सिद्धान्त र मूल्यहरूलाई पालना गराउने, प्रचलित कानूनहरूको पालना गराउने, प्रचलित मापदण्डहरूलाई कार्यान्वयन गराउने, सुशासन कायम राख्ने, र व्यावसायिक गुणस्तरमा सुधार गर्ने उद्देश्य लिएको हुन्छ । नियामक निकायबाट गरिने अनुगमनले सहकारी भित्रको व्यवस्थापनलाई सदस्यहरूको हित प्रति लक्षित गराउने मनशाय लिएको हुनु पर्दछ ।

- ◆ **रणनीतिक योजनाको तर्जुमा (Formulation of strategic planning):** सहकारीले कम्तिमा ३ वर्षको लागि आफ्नो संस्थागत विकासका लागि व्यावसायिक योजना र सदस्यहरूको उद्यमशिलता विकास सम्बन्धी रणनीतिक योजनाको निर्माण गर्नु पर्दछ । योजनाबद्ध विकासबाट सहकारीको समग्र उन्नतीमा ठूलो टेवा पुग्दछ । विशेषगरी विभिन्न कार्यकालका सहकारीका सञ्चालक समिति बीच कामको मूल्यांकनको आधार बनेको योजना र योजनाको कार्यान्वयन नै हो । रणनीतिक योजनाले वर्षभरि गरिने कार्यक्रमहरूको कार्यतालिका अर्थात् कार्ययोजना समेत बनाएको हुन्छ । साथै कार्य योजनामा जिम्मेवारी र समय सीमा समेत निर्धारण गरिएको हुने भएकोले संगठन भित्र सबैलाई कामको विभाजन र सामूहिक योगदानको वातावरण समेत बनेको हुन्छ । आफ्नो कार्यकाल भित्रै संचालक समिति र लेखा समिति बसेर अब निर्वाचित हुने संचालक समिति र लेखा समितिको लागि नेतृत्व विकास योजना (Succession Plan) को निर्माण गर्ने प्रचलन बनाउन सकियो भने सहकारी भित्र स्वस्थ ढंगले जिम्मेवार व्यवस्थापनको वातावरण निर्माण गर्न सकिन्छ । यस्तो योजनाको कार्ययोजना र उपलब्धीको मूल्यांकनको कार्यलाई समेत निरन्तर रूपमा संचालन गरी योजनामा पुनरावलोकन समेत गर्ने कुरा वार्षिक कार्य-योजनामा

समाविष्ट गर्नु पर्दछ । एउटा निश्चित कार्यकाल (३ देखि ५ वर्ष) सकिए पछि वा २ पटक निरन्तर नेतृत्व लिएपछि फेरी एक वा दुई अवधि अर्को नेतृत्व ल्याउने व्यवस्था गरेका सहकारीको सुशासनको अवस्था राम्रो रहेको पाइएको छ ।

- ◆ **जोखिम व्यवस्थापन (Risk Management):** सहकारीका संचालक, लेखा समितिका पदाधिकारी र जिम्मेवार व्यवस्थापकहरूले संयुक्त रूपमा संगठनको वार्षिक जोखिमको विश्लेषण गर्नु पर्दछ । कारोवारको जोखिम व्यवस्थापनका साथै आपतकालीन घटनाका कारणले सिर्जना हुने क्षतिको वारेमा पनि आवश्यक व्यवस्था मिलाउनु पर्दछ । उदाहरणका लागि वित्तीय कारोवार गर्ने सहकारीले निक्षेपको सुरक्षण वा विमाको व्यवस्था गरी सहकारीका सदस्यहरूले संचित गर्न सहकारीमा ल्याएको परिश्रमको कमाईको सुरक्षाको प्रत्याभूति गराउनु पर्दछ । त्यसैगरी सहकारीले गरेका लगानीको सुरक्षाको लागि धितोको मूल्यांकन र विमाको आवश्यकता पर्दछ । यसका साथै ऋण लगानीमा हुने जोखिमबाट सहकारीको अस्तित्वलाई जोगाउन जोखिम कोषहरूको व्यवस्था समेत अनिवार्य गरिएको हुनु पर्दछ । उत्पादनमा वा बजारीकरणमा संलग्न सहकारीहरूले सम्पत्तिको विमा वा सुरक्षण कोषहरू मार्फत जोखिमको व्यवस्थापन गरेकै हुनु पर्दछ । प्रत्येक सहकारीहरूले सहकारीको प्रकृतिका आधारमा व्यावसायिक जोखिमको विश्लेषण र सो अनुसार जोखिम व्यवस्थापनका लागि प्रचलित विधिहरूको अभ्यास र अनुसरण गर्नु आवश्यक छ । वित्तीय कारोवार गर्ने सहकारी संघ संस्थाहरूले कारोवारको अनुपातहरूलाई सन्तुलित राखी कुनै पनि प्रकारका जोखिमको दायित्व न्यून गरिएन भने त्यस्ता सहकारीको अस्तित्व जोगाउन सकिदैन भन्ने कुराको हेक्का राख्नु आवश्यक छ ।
- ◆ **स्वच्छ एवं जवाफदेही व्यवस्थापन (Integrity and Accountability in Management):** सहकारीका जिम्मेवार पदाधिकारी र समग्र व्यवस्थापनमा संलग्न कर्मचारीहरूमा इमान्दारिताको अभाव भयो वा निर्दिष्ट विधि अनुसार चल्ने चलाउने वातावरण बनेन भने त्यस्तो संगठन असफल हुन्छ । त्यसैले पनि जिम्मेवारी निर्धारण र कार्यान्वयनमा विधिहरूको निर्माण आवश्यक पर्दछ । व्यक्ति र संस्था बीचको निहित स्वार्थको व्यवस्थापन गर्न सकिएन भने अधिकार प्राप्त अधिकारीले संगठनको स्रोत साधन आफ्नो हितका लागि प्रयोग गर्नुका साथै गलत निर्णयहरू गरी संगठनलाई धराशायी बनाउँदछन् । यस्का लागि उपयुक्त लेखा व्यवस्थापन, लेखा समितिको प्रभावकारिता, प्रत्येक कारोवारमा कम्तिमा २ व्यक्तिहरूको संलग्नता, आवश्यक नीति निर्देशिकाहरूको निर्माण तथा

पालना, बलियो आन्तरिक नियन्त्रणको पद्धतिको वारेमा व्यवस्थापन पक्षले संस्थागत व्यवस्थाहरु गर्नु पर्दछ।

- ◆ **सदस्यहरुको सेवा (Service to Members):** सहकारी समुदायका सदस्यहरुको संयुक्त स्वामित्वको व्यवसाय हो भन्ने कुरा सदैव ख्याल राख्नु पर्दछ। सदस्यहरुलाई उचित मूल्य, गुणस्तर, परिणाम र समयमा वस्तुको आपूर्ति तथा सेवा प्रवाह गर्नु पर्दछ। यसका साथै संगठनको गतिविधिहरु बरोबर जानकारी गराउने र सदस्यहरुबाट सुझाव र गुनासाहरु लिई सोको आधारमा उपयुक्त कदम चाल्न सकिने विधिहरुको निर्माण आवश्यक हुन्छ। समय समयमा सदस्यहरुको सन्तुष्टीको स्तर मापण गर्ने विधिहरुबाट समेत सदस्यहरु लक्षित भई सहकारीको समग्र व्यवस्थापनलाई दिशा निर्देश गर्न सकिन्छ। सदस्य चार्टरको निर्माण गरी सेवा प्रवाहमा गुणस्तर कायम गर्ने प्रयास गर्नु पर्दछ। सेवाको विविधकरण गरी सदस्यहरु माझ सहकारीको छवि थप प्रभावकारी बनाउने काममा सञ्चालक र व्यवस्थापकहरुको प्रयासको निरन्तरताले सहकारीमा सुशासन कायम राख्न मद्दत पुग्दछ।
- ◆ **व्यावसायिक स्वच्छता (Professional Integrity):** व्यवस्थापनमा सक्रिय सञ्चालक समितिका सदस्यहरु एवं सदस्यहरुको तर्फबाट प्रतिनिधित्व गर्ने अन्य समितिका पदाधिकारीहरु साथै व्यवस्थापनमा संलग्न कर्मचारीहरुमा व्यावसायिक इमान्दारिता र स्वच्छता कायम गर्ने विधिहरुको अवलम्बन गरिनु पर्दछ। यसका लागि विशेष गरी जिम्मेवारी र जवाफदेहिताको वारेमा स्पष्ट व्यवस्थाहरु गरेर यसलाई व्यवस्थित गर्न सकिन्छ। यसका साथै आन्तरिक नियन्त्रण पद्धति पनि भर पर्दा बनाइनु पर्दछ। प्रक्रियाहरु निर्धारण गर्दा एक जनाले गरेको कामको स्वतः अर्को व्यक्तिले पनि जानकारी पाउने विधिको स्थापना आन्तरिक नियन्त्रणको एउटा सामान्य विधि हो। पदाधिकारीहरुको लागि आचार संहिताको निर्माण र सोको पालनाको अनुगमन गर्ने विधिको स्थापनाले व्यावसायिक इमान्दारिता र स्वच्छता कायम राख्न बल पुऱ्याउँछ। निहित स्वार्थको द्वन्दको व्यवस्थापनमा समेत यस्तो आचार संहिताको व्यवस्थाले सघाउ पुग्दछ। इमान्दारिता र स्वच्छताको व्यवहार सबैले अनुभूत गर्ने गरी जानकारी हुने गराउने व्यवस्थाबाट संस्थाको ख्याती अथवा प्रतिष्ठामा थप बल पुग्दछ।
- ◆ **पारदर्शिता (Transparency):** सहकारीका क्रियाकलापहरु अन्य विधिको व्यवसायको तुलनामा बढी पारदर्शी बनाउनु पर्ने हुन्छ। लोकतन्त्रमा भै सदस्यहरुको प्रत्यायोजित अधिकारको प्रयोग सञ्चालक समितिले गर्ने हो। सञ्चालक समितिका सदस्यहरु पूँजी लगानीको आधारमा नभई व्यक्तिगत क्षमता र प्रभावका आधारमा निर्वाचित हुने भएकाले सञ्चालक समितिका सदस्यहरुलाई

जिम्मेवार बनाई राख्न पनि पारदर्शिताका विधिहरु निर्माण गर्नु पर्ने हुन्छ। यसका लागि सहकारीका गतिविधिहरुका वारेमा सदस्यहरुलाई जानकारी गराई राख्ने स्थायी व्यवस्था गर्नुपर्ने हुन्छ। सहकारी सञ्चालनमा साधारण सभाबाटै निर्वाचित हुने गरी लेखा वा सुपरीवेक्षण समितिको गठन गरिएको हुन्छ। यस समितिले सहकारीको व्यवस्थापनका हरेका पक्षहरुमा निगरानी राख्ने र बेलाबेलामा सञ्चालक समिति मार्फत समग्र व्यवस्थापनलाई अपेक्षित सुधारका लागि सुझावहरु राख्ने काम गर्दछ। हाम्रो देशको सहकारी कानूनमा लेखा समितिलाई विशेष परिस्थितिमा कारण खुलाई सञ्चालक समिति मार्फत विशेष साधारण सभाको माग समेत गर्ने अधिकार दिइएको छ। यति महत्वपूर्ण समितिको निर्माणमा हाम्रो देशका सहकारीहरुले उचित ध्यान पुऱ्याउन नसक्दा स्वनिियमनको पक्ष कमजोर बनी राज्यले हस्तक्षेप गर्ने सम्मको अवस्था सिर्जना भएको छ। यसका साथै अन्तर्राष्ट्रिय प्रचलनको रुपमा रहेको लेखापरीक्षकको नियुक्तिमा समेत साधारण सभा मार्फत सदस्यहरुको निर्णयले नियुक्त गर्ने व्यवस्था रहेको छ। तर प्रचलनमा भने साधारण सभाबाट अधिकार प्रत्यायोजन गराई सञ्चालक समितिले नै लेखापरीक्षक नियुक्त गर्ने र पारिश्रमिक तोक्ने गरिन्छ। यसरी सञ्चालक समितिले लेखापरीक्षक नियुक्त गर्दा लेखापरीक्षकको उत्तरदायित्व सञ्चालक प्रति हुने भई लेखापरीक्षण प्रतिवेदन त्रुटिपूर्ण हुन पुग्दछ। यस बाहेक लेखा समितिको वार्षिक प्रतिवेदन समेत विभिन्न कारणबाट सञ्चालक समितिको पक्षमै आउने प्रचलन बनेको छ जसले गर्दा पारदर्शिताको पक्ष कमजोर बनी सदस्यहरु ठगिने सम्भावना बढ्न गएको छ। यसैले सहकारीको व्यवस्थापन र सञ्चालनलाई प्रक्रिया सम्मत बनाई सोको जानकारी लिन सकिने सरल र सहज अवस्था बनाउने प्रयास सरोकारवाला सबैले गर्नु पर्दछ।

- ◆ **सीप र व्यावसायिकताको विकास (Skills and Professional Development):** सहकारीको सुशासनका लागि व्यवस्थापनमा रहने निर्वाचित तथा नियुक्त भएका पदाधिकारीहरुको व्यावसायिक दक्षता र सीपको विकासमा निरन्तर ध्यान दिनु पर्दछ। सहकारी व्यावसायिक संगठन भएकोले उत्पादन देखि बजारीकरण सम्म ज्ञान र व्यवस्थापन क्षमता आवश्यक छ। त्यस्तै गरी कुनै प्राविधिक पक्ष बढी हावी भएको उत्पादन वा सेवा व्यवसायका लागि व्यवस्थापनमा संलग्न व्यक्तिहरुको लागि सामान्य स्तरको भएपनि प्राविधिक पक्षमा दखल हुनु राम्रो पक्ष हो। यसको लागि सञ्चालक समितिको गठन र व्यवस्थापक लगायत महत्वपूर्ण पदहरुमा गरिने नियुक्तिका साथै निर्णय गर्दा प्राविधिक पक्षको ठोस विश्लेषण गर्ने विधिहरुको निर्माण गरिनुले निर्णयबाट दुरगामी प्रतिकूल असर पर्ने कामबाट सहकारीलाई

जोगाउन सकिन्छ । यसका लागि सञ्चालक समिति तथा व्यवस्थापनका सम्बन्धित जिम्मेवार पदाधिकारीहरूलाई उपयुक्त तालिम तथा अध्ययन भ्रमणहरू गराउने व्यवस्था पनि सहकारीमा हुनु पर्दछ ।

◆ **सामाजिक उत्तरदायित्व (Social Responsibility):**

सहकारीको सातौँ सिद्धान्तले सहकारीले समुदाय प्रतिको उत्तरदायित्व निर्वाहको दायित्व सुम्पेको छ । सहकारीको निर्माण समुदायका व्यक्तिहरू मिलेर आफ्ना आवश्यकता र आकांक्षाहरूको परिपूर्ति गर्ने उद्देश्यले भएको हुन्छ । समग्र समाजको आर्थिक तथा सामाजिक विकासका साथै समाजका समस्याहरू समाधान गर्न सहकारीका संघ संस्थाहरूले योगदान पुऱ्याउनु पर्ने हुन्छ । समाजमा गरिने योगदानबाट मात्र सहकारी र निजी क्षेत्र बीचको फरक स्थापित गर्न सकिन्छ । सामाजिक उत्तरदायित्व भन्नाले वातावरण संरक्षण र सुधारका कार्यहरू, समाजमा देखिने विकृतिहरूको नियन्त्रणमा सहकारीले सञ्चालन गर्ने रचनात्मक कार्यहरू, सामुदायिक विकासका लागि सहभागिता जनाउने व्यवहारहरू, आदिलाई यस क्रियाकलापहरू अन्तर्गत राख्न सकिन्छ ।

◆ **सहकारी बीचको सहकार्य (Cooperation among Co-operatives):**

सहकारीको छैठौँ सिद्धान्त सहकारी बीचको सहकार्यका लागि सहकारीका प्रारम्भिक संस्थाहरू मिलेर स्थापना गरेको सहकारीको युनियन र युनियनहरू समेत सदस्य हुन सक्ने माथिल्ला तहका संघहरू मार्फत सहकार्यको संस्कृति निर्माण गर्नु हो । एक आपसमा मिलेर आ-आफ्नो व्यवसायको प्रबर्द्धन गर्न यस सिद्धान्तले सहकारीहरूलाई निर्देश गरेको छ । साभा समस्याहरू समाधान गर्न वा एक संस्थाको समस्यामा अरु सहकारीका संस्थाहरूको सहयोग जुटाउन सहकारी बीचको सहकार्य उपयोगी हुन्छ । नेपालको प्रचलित सहकारी कानूनले सहकारी बीचको सहकार्यका लागि जिल्लास्तर मा जिल्ला संघ र विषयगत जिल्ला संघको गठनको व्यवस्था गरेको छ । केन्द्रीयस्तरमा विषयगत वा प्रकृतिका आधारमा केन्द्रीय संघको निर्माण गर्न सकिने र यस्तो संघमा विषय मिल्ने प्रारम्भिक सहकारी संस्थाहरू र विषयगत जिल्ला संघहरू सदस्य बन्न पाउने व्यवस्था रहेको छ । जिल्लातहका र केन्द्रीयस्तरका संघहरूको सदस्यता रहने गरी राष्ट्रिय सहकारी संघको निर्माण हुने व्यवस्था रहेको छ । अहिले नेपालमा एउटा राष्ट्रिय संघ र चौध वटा केन्द्रीय संघहरू गठन भएको छ । जिल्ला तहमा जिल्ला सहकारी संघ र विषयगत सहकारी संघहरूको संख्या भण्डै २ सय नाघेको छ । कानूनी व्यवस्थामा भएको त्रुटीका कारणले व्यावसायिक उद्देश्यले सहकारीहरू संगठित हुन सक्ने अवस्था नेपालमा छैन जसले गर्दा सहकारीका प्रारम्भिक तहका संस्थाहरू एकलोपनाको समस्याबाट ग्रसित छन् ।

सुशासनको क्षेत्रमा यस्ता संघहरूको गठनबाट ठूलो मद्दत पुग्दछ । विशेष गरी सहकारीका संघहरूले आफ्ना सदस्य संस्थाहरूका पदाधिकारीहरूलाई तालिम र गोष्ठीहरूको आयोजना गरेर सहकारी सञ्चालनमा दक्षता अभिवृद्धि गराउन र साभा समस्याहरू समाधान गर्न व्यावसायिक तथा नीतिगत सुधारका लागि पहल गरी सहकारी संघ संस्थाहरूको प्रबर्द्धन र विकासमा सहयोग पुऱ्याउन मद्दत मिल्दछ । सहकारी संघ संस्थाका पदाधिकारीहरूले पालना गर्नुपर्ने आचार संहिताको निर्माण तथा सोको अनुगमन समेत गरी सहकारी संघ संस्थाहरूमा सुशासन कायम गर्न योगदान पुऱ्याउन पनि सहकारीका संघहरूको भूमिका महत्वपूर्ण हुन्छ । सहकारी संस्थाहरूको स्वनियमनको पक्षलाई बलियो बनाउन संस्थाहरूको अनुगमन र कारोवारको सुरक्षण सम्बन्धी व्यवस्थामा समेत धेरै देशका सहकारीका संघहरू सक्रिय र प्रभावकारी रहेका छन् । सहकारीको सिद्धान्त र मूल्यहरूको पालना गराई समग्र सहकारीको अभियानलाई परिस्कृत र प्रतिस्पर्धि बनाउने प्रबर्द्धनको भूमिकामा समेत सहकारीका संघहरू प्रभावकारी भएको पाइएको छ । नेपालमा सहकारीका संघहरू सवल बन्दै गएका छन् । यद्यपी व्यवस्थापकीय ज्ञानको कमी र सहकारीको छोटो अभ्यासका कारण नेतृत्व परिस्कृत भइनसकेकोले सबै सहकारी संघहरूको भूमिका प्रभावकारी नभएको अवस्था छ ।

◆ **प्रजातान्त्रिक अभ्यास (Democratic Practices):**

सहकारी संस्थाहरूको व्यवस्थापनलाई चुस्त र दुरुस्त राख्न सहकारीको सिद्धान्त अनुसार संघ संस्था भित्र प्रजातान्त्रिक अभ्यास गर्ने उपयुक्त वातावरणको निर्माण आवश्यक छ । सहकारीमा पूँजी होइन सदस्य प्रधान हुन्छ र प्रत्येक सदस्यको निर्णय माथिको अधिकार समान हुन्छ । सदस्यहरूले एक सदस्य एक मतका आधारमा संस्थाको महत्वपूर्ण निर्णयहरूमा आफ्नो मताधिकारको प्रयोग गर्दछन् । सञ्चालक समितिको निर्वाचनका साथै सञ्चालक समितिको भूमिका माथि निगरानी राख्न लेखा वा सुपरिवेक्षण समितिको निर्वाचनमा समेत सबै सदस्यहरूले मताधिकारको प्रयोग गरेका हुन्छन् । यस्ता समितिका पदाधिकारीहरू निश्चित समयको पदाधिकारका लागि मात्र निर्वाचित भएका हुन्छन् । निर्दिष्ट पदावधि नसकिदै पनि विशेष साधारण सभा बोलाई समितिका कुनै पदाधिकारीको पदाधिकार समाप्त गरी उक्त पदमा अर्को सदस्यलाई निर्वाचित गर्ने वा समिति भंग गरी अर्को समिति समेत गठन गर्ने सार्वभौम अधिकार सदस्यहरूलाई हुन्छ । प्रत्येक वर्ष आर्थिक वर्ष भुक्तान भए पछि सहकारीको हिसाब किताब साधारण सभाले नियुक्त गरेको लेखापरीक्षकबाट लेखापरीक्षण गराई सोको प्रतिवेदन समेत साधारण सभामा पेश गरी छलफल गराउने काम पनि प्रजातान्त्रिक अभ्यास भित्रैको काम

हो । यस्तो वार्षिक साधारण सभामा सञ्चालक समितिको वार्षिक प्रतिवेदन र लेखा समितिको समेत वार्षिक प्रतिवेदन पेश गर्नुपर्ने हुन्छ । यसरी पेश भएका प्रतिवेदन माथि छलफल भई सो उपर सदस्यहरुको प्रतिक्रियाका आधारमा विशेष निर्णयहरु हुने भएकोले सहकारीका सदस्यहरुले प्रजातान्त्रिक अभ्यासका आधारमा सहकारी भित्र सुशासन कायम गर्न सक्दछन् भन्ने प्रयाप्त आधार सहकारीका सिद्धान्त तथा मूल्यहरु र प्रचलित कानूनहरुले दिएको हुन्छ । जुन सहकारीमा सदस्यहरुले आफ्नो अधिकार र कर्तव्यको भूमिका निर्वाह गर्दैनन्, त्यस्ता सहकारीहरुमा नचाहिने क्रियाकलाप हुनु नौलो मानिदैन । सहकारी अर्थव्यवस्था ज्यादै सम्बेदनशिल विषय हो । सरकारले बढी चासो दिँदा पनि सहकारीमा समस्या सिर्जना हुन्छ भने सहकारी प्रति राज्यको उदासिनताले पनि सहकारी अर्थव्यवस्थाको अपेक्षित ढंगले विकास

हुन सक्दैन । सहकारीको विकासको लागि नीतिगत व्यवस्थाहरु, सहजिकरणका कार्यक्रमहरु, र सहकारीका नाममा हुने गलत क्रियाकलापहरु मथिको निगरानी सरकारी उत्तरदायित्व भित्रको विषय हो । नागरिक समाजको भूमिकाले पनि सहकारीलाई अनुकूल प्रतिकूल प्रभाव पार्दछ । सहकार्यको संस्कृति धमिलो बन्दै गएको हाम्रो समाज अनि व्यक्तिगत स्वार्थ प्रधान बन्न सहयोग पुऱ्याउने भ्रष्ट र आपराधिक प्रवृत्तिले संरक्षण पाउने हाम्रो राजनैतिक परम्पराले सहकारीको विकासमा बाधा सिर्जना गरेको तर्फ पनि हाम्रो ध्यान जानु आवश्यक छ । जे होस सहकारीको विकासका लागि आशालाग्दो वातावरणको सिर्जनामा स्वयं सहकारीकर्मीहरुको भूमिका प्रखर बनिरहेको र ठूलो संख्यामा जनआकर्षण बन्दै गएकोले अभियानले नै सहि दिशा दिन सक्छ भन्ने विश्वास लिने आधार तयार भने भएको छ ।